घरीय तीन रवि चढ़िय। चल्यौ गोरी नरिंद बल॥
रत्त डंड संदूक। रत्त धज चोंर साहि पर॥
रत्त गजनि गज झंप। रत्त बैरष बर टोपं॥
अग्गै षान रती सनाह। रंग रनबी बर ओपं॥
ओपम एह कविचंद कहि। देषि सुबर सुलितान बर॥
षह जीत राह रवि सरस हुअ। मनों जत्त किय भोम बर॥
छं० ॥ १५८॥

शाही सेना का आतंक वर्णन।

चलंत रेन रबि लुक्कि। चक्क चक्की चष ढरयौ॥
सेस भार कलमल्यौ। कुंभ आरंभरि डरयौ॥
सरिता जल मुक्कयौ। नीर साहन नहि पुरयौ॥
हय हय हय उचरंत। चक्क चक्को बिसु चरयौ॥
अंधियार भयौ वासुर असत। दिसा विदिसि सुभ्भै न तह॥
साहाबदीन चालंत दल। डरहि राय.अत मंडलह॥छं०॥१५९॥

शाह के कूच के समय अशकुन होना और तत्तार खां का कूच बंद करने को कहना।

भुजंगी॥ चल्यौ साहि आलम तें चित्त दूनी। मिलीं वाट वाराह नौडार ऌनी॥
रथं मिच नीचं फिकारंत फेकी। उडी ग्रद्ध पच्छं मनों मोन केकी॥
छं० ॥ १६० ॥

लरी मग्ग मंजार द्वै सहस ऊनी। परी बूंद आकास तें श्रोन दूनी॥
चल्यौ उंट फेकौ फिकारंत केसं। सितं चीर नारी सु मुष्षं उदेसं॥
छं० ॥ १६१ ॥

पर्यौं पंजरौं कोक पूके पुरानं। जरी लोह भट्ठी सुदेखी सुरानं॥
गही बग्ग फेरी ततारं सुभाई। रहौ आज दीहं जमाराति सांई॥
छं० ॥ १६२ ॥

पठं पै जपै गँबरां निवारी। कहै देव देवंग रब्बं पहारीं॥
मनं मति छंडी विमासं अधारी। रच्यौ षेल मंडी सु क्रीला विहारी॥
छं० ॥ १६३ ॥

दहं रोज रोजं करी बंध बंधी। लरैं ऐन चहुआन सो स्वामि सद्धी॥
इला एक अल्ला तनी आलि छंडो। दई एक देहं तनौ तौन पंडौ॥
छं० ॥ १६४ ॥

शाह का कहना कि वह परवरदिगार सब जगह पर है फिर शकुन अशकुन क्या?

कवित्त॥ सुनौ षान तत्तार। तेग सद्दै सुष सद्दा॥
जो कर इक्क तनीय। रोजगारी नफजंदा॥
वल्ली अली आदंम। पैन पैगंबर कीनो॥
वे भूले तुम जान। किसब जिन तेग न लीनो॥
पल्लटे भेष छंडो दुनी। षरस पीर हाजुर निजर॥
गज नेज साह गोरी घरां। करि निवाज बंदहु सफर॥छं०॥१६५॥

जहां पीर पर सिद्ध। बंग जिहि ठाम न दिज्जिय॥
जहां मुसाफ नह पठय। कतेब कुतबा नब चिज्जय॥
जहां सुनाहि कुरान। नही महजिद धर पर किन॥
परैं न गाय लिज्जैं। षुदाय रेजा करि वारन॥
जहां हुकम नाहिं काजी करत। तुरकनि षनि गड्डिय जहां॥
सुरतान कहै साहाबदी। सो जिहान हमकों कहां॥छं०१६६॥

शाह का मीरा शाह के समय की घटना का प्रमाण देना एवं मीरा शाह का संवाद वर्णन।

रोसन अली फकीर। गसा रमता अजभेरं॥
दही मोल ले चषत। हुआ षट्टा दिय फेरं॥
गुज्जरियां पुक्कार। जाय दरबार सिताबं॥
हडी भिंटी गुनहि। काटि अंगुरि बिन ज्बावं॥
मक्कां सु जाइ फिरियाद करि। मीरां सैद हुसेन अग॥
नौयति षुदाय मद्यत करन। इह अप्पिय मन धरि उमग॥
॥ छं० ॥ १६७ ॥

दूहा ॥ मरना जाना हक्क है। जुग रहैगी गल्लहां ॥
सा पुरसों का जीवना। थोड़ाई है भल्लां ॥ छं० ॥ १६८ ॥

मुसल्मानी लश्कर का सौदागरों के भेष में अजमेर आना।

भुजंगी ॥ कहै दीन कज्ज परस्सै कुरानं। करों रद्द मंद्दं सबैं हिंदवानं ॥
नमै पीर पैगंबरें थान मक्कां। रहा बन्न नामं जुगं च्यार चक्का ॥
॥ छं० ॥ १६९ ॥

दिनं सत्त हूते सु बीवाह अड्डे। करं कंकनं सेहरा बंधि चढ्ढे ॥
तनं मंन एकं चोआलीस यारं। चल्ले संग सौदागिरं रूप धारं ॥
॥ छं० ॥ १७० ॥

जलं पंथ के अछ अच्छे उतंगा। पुलै नाव ज्यों तीर वेगं विहंगा ॥
दरब्बाफ जरदोज जरकस्स झूलं। रहै नेक चष्षं ढकै मष्षतूलं ॥
॥ छं० ॥ १७१ ॥

इसे अश्व लीयें धरा हिंदवानं। दियौ आय डेरा अजम्मेर थानं ॥
दरब्बार जाए कह्यौ मीर षोरं। सनंमुष्ष उभ्भै रहे हथ्थ जोरं ॥
॥ छं० ॥ १७२ ॥

हयं हेरि ल्यायौ षंधाई सुगड्डं। रवी अर्ध कै कन्ह दधि मथ्थि कढ्ढं ॥
सुनै कन्न आना महीपत्ति आयं। सबें छोरि फेरें तुरंगा दिषाय ॥
॥ छं० ॥ १७३ ॥

षुरी ए वियांचा बकी राह गीरं। रहव्वाल चल्लै न हल्लै सरीरं ॥
दमानंक कूदंत नाचंत याल्लं। निरष्षे परष्षे हरष्षे भुआलं ॥
॥ छं० ॥ १७४ ॥

मुहं मंगि दामं करे कौल बोलं। लिहे पंच सैं हैवरं हेरि मोलं ॥
जमा जोरि मंडै सवा लष्ष दामं। लिये कागदं कायथं अंक तामं ॥
॥ छं० ॥ १७५ ॥

करे छाप आपं बुलाए हजूरं। सनंमान चहुआन रष्षै गरूरं ॥
गयो संभरीनाथ दै हथ्थ बीरा। करे चूक सक्यौ नहीं तथ्थ मीरा ॥
॥ छं० ॥ १७६ ॥

अजैपाल जोगी करामात अग्गं । उठे हथ्थ नाहीं मनोंकीनि नग्गं ॥
निंवाजं गुदारे दियं बंग जब्बं । गये देव हिंदून के भज्जि तब्बं ॥
॥ छं० ॥ १७७ ॥
करं कार्फरं जो इहां मौत दीजै । मह्वरत्ति कीनी दही पीर हौजै ॥
तिन कारनं अप्पने हथ्थ अप्पं । कटे सीस बेगं चलो पुट्टि धप्पं ॥
॥ छं० ॥ १७८ ॥
इलल्ला महमंद रस्सूल इल्ला । कलम्मा पढ़ै जोर किन्नो सुकीला ॥
मिलें आप मेंसं मुषं दस्त चूंमें । इसे सेर ज्वानं भषैं दोइ पुम्मै ॥
॥ छं० ॥ १७९ ॥
तिनं षिज्जि बिज्जू जिसी तेग कड्डीं । चमक्के घरंको चरं सहस अड्डी ॥
॥ छं० ॥ १८० ॥

कवित्त ॥ चौआलीसों यार । कड्डि नंगी समसेरं ॥
कर कड्डे सिर अप्प । चढें बिंटली सुरमेरं ॥
हिंदू मूसलमान । जुरत हय गय घन पायल ॥
चहुआन आना नरिंद । जीति उम्भौ अजरायल ॥
कटि लीन भिन्न होइ मीर परि । अमर रषिऔ साफ धर ॥
तहि थान आय दरबेस इक । ढवाज मोंनदी बंधि घर ॥
॥ छं० ॥ १८१ ॥
सवासेर दिन मान । आनि तहं पुहप उछारत ॥
रज कंकर करि दूर । धूर हड्डियां बुहारत ॥
जमाराति दे सुपन । मीर इह कौन हुकंमं ॥
तुम ऊपर चढ्डि है । सवामन सदा कुसंमं ॥
अजमेर पीर तुम प्रगट हो । कितक दिबस के अंतरै ॥
हिंदवान पान घटिहै अवनि । इहन कोल हम परतरै ॥छं०॥१८२॥

उक्त संवाद सुनाकर शाह का कहना कि दिल को मजबूत करो और चलो ।

दूहा ॥ इहसु कथा कहि साहि सों । फुनि अष्पिय तत्तार ॥
कायर पन मन छंडि दै । धीर पकरि गहि सार ॥ छं० ॥ १८३ ॥

तत्तार का मोरचे बंदी से आगे कूच करनां और एक पड़ाव के फ़ासले से बराबर धीर के पीछे पीछे चलनां।

कवित्त ॥ तू आतुर पतसाहि। हाम हिंदू सामंतां ॥
जोरा सों ज्यौं जक्क। बघघ छंडै धावंतां ॥
मे मंतां सुलतान। सुभभ्भ सुलताना मेला ॥
करि मेला भंडार। जंग होइहै सुष षेला।
टिल्ला पहार ठठ्ठा टिल्ला। वट्ट निहट्टा बढ्ढियै ॥
कोटाह कोट सा सिंधु तिय। इम हिन्दू दल सिढ्ढियै ॥
॥ छं० ॥ १८४ ॥

जल जोबन साहाब। दीन सुलतान दुरंगे ॥
किए कूच पर कूंच। कुरँग तारीय कुरंगे ॥
जथ्थ रेनि रहै धीर। दीह तहां संहसु अच्छै ॥
बर बेल्ली पुंडीर। साहि फल पच्छै पच्छै ॥
आवाज बज्जि दिल्ली सहर। यह पुकार पहक्किया ॥
राजोह माम पंचो दिहां। ग्रहां धीर गहक्किया ॥ छं० ॥ १८५ ॥

धीर पुंडीर के वापिस आने की खबर दिल्ली में होना दर्शकों की भीड़ होना और धीर को देखकर राजा का प्रसन्न होना।

ग्रह आप्पनां छंडि। राजग्रह धीर धवंदा ॥
ढा ढिल्ली रा लोय। ताहि देखन आवंदा ॥
निय नीचानीं नेन। वमन उंच्चा उच्चारां ॥
ज्ञां लग्गानी अग्गि। जीह जंपी पुकारां ॥
दरबार राज भर भीर घन। मन उलास भेब्यो धनी ॥
भुअ भंग दुःष दुःषांह गत। जनो कि नाग लद्धी मनी ॥
छं० ॥ १८६ ॥

दूहा ॥ सासंता मंतां अमत। का चिंता दृत वारि ॥
उट्ठि न सिर संमुहं सहय। लज्जा विरहां भार ॥ छं० ॥ १८७ ॥

भुजंगी-॥ पाधरे दीह सा चाहुआनं । सिरं उच्च बज्जे सु भेरी निसानं॥
सितं छत्र रत्तं रषत्तं निसुभ्भं । इला एक राजंग ते सुम्भ उम्भं॥
छं० ॥ १८८ ॥

धीर पुंडीर के आने का समाचार सुन कर रानी पुंडीरनी और इछनी का उत्सव मनाना।

कवित्त ॥ सा इंछिनि पामारि । राज बज्जे बज्जायौ ॥
धा धंषानी छंडि । प्रौढ जोवन लज्जायौ ॥
अरि अनंद चंद्राह । चंद जाया जनु अज्जा ॥
हेम चीर हम्मेल । मेल नग आरति कज्जा ॥
उछंग अंग राजन दुरां । राज काज सब सुद्दरे ॥
सा धान साहि देषंतही । आज हिन्द, दिन पद्धरे ॥ छं०॥१८९॥
प्रथीराज चहुआन । विलसि वसुधा सह उप्पर ॥
डंड भरइ चक्कवै । पिसुन पीलै कोलू धर ॥
सहहि न कोइ संग्राम । पुब्ब पच्छिम रुद छिंन ॥
इह अपुब्ब पिष्षयौ । गौर गाजनै ततच्छिंन ॥
रहि न कोइ सुनतै श्रवन । जहं जहं सिंघ पुकारयौ ॥
आकंप भयौ सब सतुर मैं ॥ जब सुरतांन हुंकारयौ ॥छं०॥१९०॥

धीर का पृथ्वीराज से मिलाप।

दूहा ॥ भुज भिंटलौ संभरि धनी । नयन बयन मिटि चाहि ॥
ऊचै न सीस संमुत सुहर । लज्ज विरद मइ ताहि ॥ छं॥ १९१ ॥

धीर से राजा का पूछना कि तू गिरफ्तार कैसे और क्यों हुआ।

कवित्त ॥ हेट हेट गजंन गयंद । वरनि यहि हर सुत्र ॥
अग्ग मग्ग पुंडीर । मीर रावत्त न लीह तुत्र ॥
तू अलंग जुरि जंग । षग्ग षचिनि बहु अड्डो ॥
सु क्यौ गयौ गज्जन । गयंद मोहि अचरज बड्डो ॥

संभरि वै इम उच्चरइ। रिपु गरिष्ट कुंजर जवह ॥
कहि भीर धीर पूरस बदन। जीवत्त गह्यौ कारन कवन ॥
छं० ॥ १९२ ॥

चामंडराय और जैतराय का धीर को धिक्कारना।

हँसिय चोंड राजैत। सामंत अभंगे ॥
यंभ फोरि गारबयौ। चंद गभरू ह्रचंगे ॥
मुष नन्हा आदान। बोल बड्डा बहि लग्गा ॥
अब गमार पुंडीर। साहि बंधै बल भग्गा ॥
सुलतान दीन सिल स्वामि सिर। भरिन जियन आसुर कन्यौ ॥
बर बरन ह्वर'इम उच्चरहि। धीरं जननि ग्रभ न गन्यौ ॥ छं०॥१९३॥

दूहा ॥ गल्यौ न ग्रव पुंडीर तुअ। जिन लज्जाई माय ॥
बंचि प्रष्टि राजन तनी। कही सुनाय सुनाय ॥ छं० ॥ १९४ ॥

धीर का पृथ्वीराज से एकान्त में सब बीतक कहना।

कवित्त ॥ समौ जानि सहि रह्यौ। धीर संमुह बोलाही ॥
अधसि होय संग्राम। दिट्ठ चावंड जिताही ॥
राज मड्डि मरजाद। समुद हद लीप नग्गौ ॥
पहुप वार पुंडीर। दाहि दाहिम भर भग्गौ ॥
पिज्जं सार धार पुंडीर पर। सिलह बंधि संमुष तही ॥
एकथ्थ जथ्थ प्रथिराज न्रप। तहां विवरि बत्त चंदह कही ॥
छं० ॥ १९५ ॥

धीर का भरे दरबार में पुनः प्रतिज्ञा करना।

आज लियूँ गज्जनौ। आज तुरकाइन डंडों ॥
मोरों आज गयंद। आज सब सेन विहंडों ॥
आज जीति गोरी। समूह पर दल वित्तारों ॥
आज चंद की आन। आज जन स्वामि उबारों ॥
सोइ आज छैज बरदाय भंनि। संभरि धनी सुधारिहौं ॥
पुंडीर धीर इम उच्चरै। आज मेछ दल मारिहौं ॥छं०॥१९६॥

चामंड का कहना कि बात कहकर पछलना वीरों के लिये लज्जा की बात है और धीर का शपथ करके कहना कि वही करूंगा जो कहा है।

कहै राव चामंड। धीर वत्तां अविचारी ॥
पातिसाह दल विषम। तुरी अगनित है मारी ॥
तीन लष्य तोषार। घालि पष्षर घूमावै ॥
मीर मलिक उमराव। काहु सावंग न आवै ॥
अति जुरत नयन षंडै षलन। फिरि पच्छौ संका करै ॥
ता जननि दोस दुरजन हँसै। जो बोलवोलि पच्छै टरै ॥छं०॥१९७॥

धूर गाज विज्जल पिसय। बोल सा पुरिस न षुट्टौ ॥
वह न्निब्बहै नियान। सो न हो अंत अहुट्टौ ॥
करै पैज पुंडीर। षग्ग षिचिन षिसि भज्जइ ॥
सिरन तुट्टि धर परय। जननि जामंत न लज्जय ॥
पुंडीर धीर इम उच्चरै। हो न बयन बोलौं घनौ ॥
हैवर मलिक हय्यह हनौ। तब सुधीर चंदह तनौ ॥ छं०॥१९८॥

चामंडराय का बचन।

चंदा बसै अकास। करह कितनौ रन पाइय ॥
कनै लंक दधि मंझ। कोइ कंचन लै आइय ॥
को केहरि कच ग्रहै। पाय को प्रब्बत ठेलै ॥
को दरिया दुस्तरै। अनिल को अंकम झेलै ॥
रावत्त राव सब संभरइ। चामंडराइ इम उच्चरै ॥
साजै विसेन [1]आसम असम। अब सुधीर तुअ किम लरै ॥
छं० ॥ १९९ ॥

धीर पुंडीर का बचन।

जब लगि सिर अरु मास। जीभ मुष यक्कय[2] ॥

(१) ए.-आलम। (२) को.-चक्कय।

जब लगि हियै हुकार । मुच्छ मुष मच्छर फरकय ॥
जब लगि कर करिवार । गहिव गज्जनवै गंजौं ॥
ढाल ढोल नेजा पराइ । संभरि वै रंजौं ॥
जब लग्गि सीस इहि कंध पर । पवन मेंघ बरसंत घन ॥
इम कहत धीर चावंड सों । पैज पनट्टय प्रान बिन ॥ छं० ॥ २०० ॥

धीर का घर जाना और सब कुटुम्बियों का उससे सहर्ष मिलना ।

निज ग्रह पत्तौ धीर । राज दरबारह संतौ ॥
अति उछाह आनंद । बिरद भर भारब हंत्तौ ॥
मिले अब्ब पुंडीर । आय चय राय ब्रग्ग बर ॥
अति सुमान दिय दान । ब्रम्न जिहि आनि मंडि कर ॥
जै जया सबद जंपै जगत । बाल व्रंद्ध उच्छव तरन ॥
अति प्रेम सहित अंतर मिले । रस सुमाह रज्जे करन ॥ छं० ॥ २०१ ॥

धीर के कुटुम्बियों का उसकी गिरफ्तारी पर लज्जा और शोक प्रगट करना ।

एक महूरत मिलिय । सब्ब संबोध सत्त किय ॥
ता पच्छै एकंत । बोलि भर बथ्थ अप्पजिय ॥
रंघर राव विरंम । सिंघ सागर पुंडीरह ॥
साहि षान सुम्मान । रामहरि राव हमीरह ॥
मालहन सुं मह्वर पति मत्त मन । कमधज केल्हन जाम पति ॥
बैठे सु चिह्न चिंता सु चित । बिरद लाज लग्गी सु अति ॥
छं० ॥ २०२ ॥

धीर का अपना बीतक कहना और सबका प्रबोध करना ।

पद्धरी ॥ जंपै सु धीर पुंडीर ताम । निज ब्रग्ग चित्त चिंता विराम ॥
मौ बोलि बच्चन न्रप अग्ग उंच । कंधैव तुम सोमान सुंच ॥
छं० ॥ २०३ ॥

नाथ मैं जैत चामंड राय। सुरतान सरिस किय बंध दाइ ॥
बंधयो कपट करिहों जु बंधि। बुझ्यौ न कोय क्रित दुष्ट संधि॥
छं० ॥ २०४ ॥

लै गये साहि समीप मोहि। संमिलिय सु दल दरवार वोहि॥
इन हनौ सद्द जंपै सु सव्व। सबदो हमीर गंभीर ग्रब्ब ॥
छं० ॥ २०५ ॥

परब्रह्म कर्म चिंते विचित्त। आवरे ग्यान आहित्त हित्त ॥
तत्तार तन्न अप्पै विश्रप्पि। पंषिनिय सुफल जैद्रथ्थ सप्पि ॥
छं० ॥ २०६ ॥

छंड्यौ जु साहि गुरु गरुह लाज। चिंते सु चिंति अति आजि साज॥
चढ्यौ जु साहि दल बल असंषि। लग्गो जु काम कारज्ज धंषि॥
छं० ॥ २०७ ॥

चामंडराय पामार जैतं। आहित्त चित्त जंपै उहैत ॥
सो चिंति चिंति चिंतौ सु काज। न्रप होइ जैत बढ्ढै सु लाज ॥
छं० ॥ २०८ ॥

धीर के कुटुंवियों के बचन।

कवित्त ॥ तब जंपै हरिराव। सरिस सारंग पुंडीरह ॥
कहिय धीर सा सुनिय। बात आभत्त सुहीरह ॥
जंपै रंघर राव हित्त। कह मत्त बिचारह ॥
सीस काज सम धरौ। ह्वर सम गरुह गुंजारह ॥
सजि चढौ अप्प सेना सकल। करो बंध अप्पान भर ॥
पड्डरे षेत पतिसाह सों। करहु झार उभझार झर ॥
छं० ॥ २०९ ॥

धीर पुंडीर का बचन।

तब तमि जंपै धीर। जुद्ध सामंत कंध तुम ॥
सजे सुभर अप्पान। प्रान अप्पौ सुझझ दम ॥
राज काज राजंग। अंग बड्डहि सु अप्प जस॥
कै जीतै उध लोक। सुजस आवरहि छोभि तस ॥

इम कहै सथ्य सज्जै सुनिज। एक चित्त आश्रित्त सब ॥
तजि मोह सोह संसार सुष। जग्यौ भोर अभ्भीर तब ॥
छं० ॥ २१० ॥

धीर का शिकार खेलने की तैयारी करना खदाइयों का आना और धीर का घोड़े मोल लेना।

उभै पष्प सुर मास। रोज तीसह रमि मंडल ॥
म्रगया करत अभ्यास। राग रँग रास सुषंढल ॥
सत्त सहस सथ सुभट। साठि दस सिंधुर सज्जिय ॥
बंदुक बानह जोर। वेद दल नौबसि बज्जिय ॥
पुंडीर धीर चंदह तनौ। अति गुमान बिरदां बहै ॥
ऐराक तुरिय सें पंच लै। सोदागर ईसप कहै ॥ छं० ॥ २११ ॥

किय हुकंम बज्जीर। मोलि लियैं ऐराकिय ॥
दिये दांम दस लष्ष। पंच लष्षह रहि बाकिय ॥
संझ समै करि महल। सबै बगसे रावत्तां ॥
प्रात समै चढ़ि धीर। भये सुभ सगुन अवत्तां ॥
तब जैतराव चावंड मिलि। सोदागर ईसफ कहिय ॥
घर जाइ जिंद लै जीवतौ। तुम धीर घत्त घल्लै सहिय ॥छं०॥२१२॥

चामंडराय का सौदागरों का धीर पर घात करने को उसकाना और सोदागरों को अपने में मंत्र विचारना।

मिलि विचिच इक ठौर। बुद्धि आलोच विचारिय ॥
दांम जिंद अरु लाज। वड़े बिय योह सुहारिय ॥
सब चौमन उच्चरिय। धीर महिमान सु संडह ॥
षान षान विधि विवह। एक चित ह्वै षग षंडह ॥
मांनी सु मत्त सब मंत मिलि। धीर प्रान इन विधि हरौ ॥
प्रगटै सु बात सामंत सुनि। हुरे गहर सब्बै मरौ ॥ छं०॥२१३ ॥

ईसफ मियां का धीर के दरबार में जाना, दरबार का वर्णन।

दूहा ॥ करि निवाज ईसफ मियां। गयौ तहां दरबार ॥
महमानी ईसफ करै। धीर होइ असवार ॥ छं० ॥ २१४ ॥

कवित्त ॥ चिचसारि कच ढारि। पान सोवन जिरि रच्चिय ॥
लाल पंच पीरोज। घने सघनं करि पच्चिय ॥
दिवस तेज परि मंद। अरक द्वादस करि जग्गिय ॥
तारक तेज फटिक्क। सघन चुनि तारन लग्गिय ॥
सामंत विलास सुष रहसि तहं। हिंदु लाट हीरां जरै ॥
संगीत राग सरसै रबन। पाच न्रित्य अग्गै परै ॥
छं० ॥ २१५ ॥

धीर का सौदागरों के डेरे पर जाना।

दूहा ॥ इह ईसफ अरदास करि। मिलिक द्रेस को जाय ॥
महमानी मीयाँ करै। धीर पधारौ पाय ॥ छं० ॥ २१६ ॥

धीर का नित्य कृत्य वर्णन।

कवित्त ॥ पंच सेर फुल्लैल। षट्ट जन मरदत तासह ॥
बाहु दंड परचंड। भीम आकार सु रंगह ॥
सहस कलस भरि नीर। इक्क विच कलस गंगाजल ॥
करि सनान पवित्त। कीय पंच गौ महाबल ॥
आमान साठि सजता वहै। पंच मुहुर सोव्रन मह्न ॥
इम नित्य धीर चंदह तनौ। षलक षग्ग वंदै सुजथ ॥छं०॥२१७॥

दूहा ॥ सुचि रुचि सेवा सगति रुचि। सरचि चरचि तरवारि ॥
फुनि आसन कीनौ असन। भोजन साल पधारि ॥छं०॥२१८॥
तहां सुभर लीने सवनि। सचि सुआर करि साद्र ॥
षटरस भोजन भांति ब। तिन महि चित्त सवाद ॥ छं०॥२१९॥

धीर पुंडीर के कलेऊ का वर्णन ।

कवित्त ॥ पै अग्ग दग्ग मन तीन । सत्त सेरह बिच सक्कर ॥
पंद्र सेर रइ भोग । एक सीरावन बक्कर ॥
सत्त सेर रोगांन । सेर पंचह कढ़ि लुच्चिय ॥
घ्रित पावक वहु अवर । करत उभै दुज सुच्चिय ॥
पहति ओर पच स्वादु । जोग राज मढकी सुभरि ॥
च्यार घंटिय दिन बाजतें । सीरामन सामंत करि ॥छं०॥२२०॥

शाह का सिंधु तट पर पहुंचना और धीर का अपनी सेना सहित तैयार होना ।

अरिल्ल ॥ साजत सयन सह पुंडीरह । तब आये तट सिंध हमीरह ॥
साजि निकट आयौ सुरतानह । है गै भार साज सब बानह ॥
छं० ॥ २२१ ॥

सुनिय बत्त सा दिल्लि नरेसं । गाजे गेंन वेंन असहेसं ॥
चल्यौ धीर साजै निज सथ्यह । सूर धीर संग्राम समथ्यह ॥
छं० ॥ २२२ ॥

पुंडीर वंशी योद्धाओं का वर्णन ।

कवित्त ॥ सहस तीन पुंडीर । धीर बर बचन अचाए ॥
चियन बसिन बसि द्रब्य । बसु अबहु मोह गमाए ॥
मंझ मेलि सामंत । रयन अद्धी ते जग्गा ॥
सुनि अवाज सुरतान । रंक धन जानि विलग्गा ॥
दुअ घटिय सोम दिन पानि पथ । सहस सट्ट सेना चली ॥
अनभंग जैत अग्या अगर । विच चमंड बज्जह बली ॥
छं० ॥ २२३ ॥

अयुत एक पुंडीर । धीर सम लोह लरन कहि ॥
बरकि बीर तम संत । सिंघ भष षान लहि ॥
दुअन पष्ष वीरंग । जुरे जिन जंग बहुत किय ॥
भूझि जम्म बहु संरुच । दुष्ट बल सकति बहुनि जिय ॥

तन तुरंग तिन नेह तजि। क्षत्रिय मरन चित एक करि॥
बढ़ि लोह छोह छुट्टै जुरन। अरन बत्त कविचंद धरि॥
छं० ॥ २२४ ॥

आठ हजार सेना सहित जैतराव और चामंडराय का आगे बढ़ना।

सहस एक देवंग। भेरि नफ्फेरि पंच सैं॥
सहस तीन अँबकीम। ढोल बंदिन सु अट्ठ सैं॥
सौ सुगंध जोति किय। अट्ठ ग्रेहं सुभ छंदं॥
दिसा सूर मुष मिच्छ। बोलि बरदाइय चंदं॥
घट घटिय लगन जुद्दह तनौं। पहर तीन विग्गि विषम॥
उपरंत सेन साजै जुरहि। तब सु साहि साजी सुषम॥
छं० ॥ २२५ ॥

सुलतान के आने की खबर होना और सबका सलाह करना कि अब क्या करना चाहिए।

जब ग्रह आयौ धीर। पुट्ठि सुरतान सँपत्तौ॥
सुनिय राय चामंड। जैत सम मन्त्र मिलंतौ॥
सज्जिग हय गय साहि। सिंधु आयौ यह उप्पर॥
धीर तेन छंडयौ। पच्छ चंपौ दल दुत्तर॥
क्त्यांह एह अप्पन करिय। अब्ब कहौ कहा किज्जियै॥
भज्जै जराज सुलतान रन। तौ इन मति अप्पन छिज्जियै॥
छं० ॥ २२६ ॥

जेन बल न जै होइ। तेह झुझ्झै कनवज्जां॥
सोइ मंत सुद्दरै। जैन जित्ते रन रज्जां॥
सत्त मंत सुभ चरिय। जैत चामंड सु उट्ठिय॥
गये सजन निज ग्रेह। आय सब सथ्थ स पुट्ठिय॥
चामंड गज्ज मंग्यौ चढन। सम बैरी दाहिम्म बर॥
आयौ सु चंद बरदाय तिहि। खेत सु बुल्ल्यौ गुझ्झ गुर॥
छं० ॥ २२७ ॥

कविचन्द का चामंडराय के घर जाकर उससे बेड़ी उतार कर युद्ध में चलने के लिये कहना और चामंड का कविचंद की बात मान लेना ।

पद्धरी ॥ जंपहि सु तथ्थ भट चंद कथ्थ । तुम रची बुद्धि सब्बह समथ्थ ॥
स्वामित्त ध्रंम तुम रत्त राह । बेरी सु धरी अग्याह राह ॥
छं० ॥ २२८ ॥

दल मेछि साहि आयौ असंषि । देषहु सु जुद्ध तुम उभय अंषि ॥
बेरी सु कढ्ढि तुम जुरो जुद्ध । जानौ सु सब्ब गुर घात ब्रद्ध ॥
छं० ॥ २२९ ॥

कह्यौ सुमंत बेरी सुपाय । जै होइ जेम चहुआन राय ॥
चहुआन कन्ह गोयंद राज । कमधज्ज राइ निढ्ढुरह लाज ॥
छं० ॥ २३० ॥

पज्जून राय बंधव बरुन्न । कनवज्ज अग्र सुभ्भ्भे सुरन्न ॥
ढिल्लीय अवर दिष्यो न राज । जिहिँ होइ आज चहुआन लाज ॥
छं० ॥ २३१ ॥

जिम जरौ षेत षल विषम घाइ । तुम तजौ बीर बेरी सु पाइ ॥
मन्यौ सुमंत चामंड चंद । मन भए सुध उछह अनंद ॥
छं० ॥ २३२ ॥

पय तरह लोह कढ्ढै सु ताम । लंगरह जानि इभमह विराम ॥
मंगयौ कनक वाजी सु एह । जातिहि जुगंम अति सुध देह ॥
छं० ॥ २३३ ॥

पष्षरह चँमर गज गाह रज्जि । सोव्रंन मुद्र सुभ तेज सज्जि ॥
आवद्ध बंधि सब सक्क भाजि । सोभंत जानि भीषम समाजि ॥
छं० ॥ २३४ ॥

चावंड रोहि वाजी सु अप्प । जंप्यौ सुमंच निज इष्ट जप्प ॥
सजि चल्यौ सब्ब दाहिम्म सथ्थ । द्वै सहस सूर गरुअत्त हथ्थ ॥
छं० ॥ २३५ ॥

सम चल्यौ जैत निज सेन साजि । सारद सहस सेना सुगाजि ॥
चढ़ि चलिय उभय घन बज्ज बाज । तब चल्यौ अप्प प्रथिराज राज॥
छं० ॥ २३६ ॥

पृथ्वीराज का यह समाचार सुन कर कुपित होना और लोहाना को भेजकर चामंड को पुनः बेड़ी पहनवाना ।

कवित्त ॥ गाजि गरुत्र चहुत्र्आन । सुनत अप ग्रंह सपत्तौ ॥
दीन उतर ता प्रछै । बोलि लोहान सु तत्तौ ॥
तुम बेरी ले जाहु । पाय च्चावंड सु घत्तौ ॥
इन हम अग्या तजी । अप्प बल राह उमत्तौ ॥
हम करत लाज कैमास कौ । अरु सगपन सन मंध घन ॥
आक्रस्सि मन्न हम क्रोध घन । मभ्भ्हें गहि रघ्यौ सुमन ॥
छं० ॥ २३७ ॥

ले बेरी लोहान । ग्रंह चावंड सपत्तौ ॥
धरि अग्गैं चावंड । देषि प्रज्जरि चित चिंत्यौ ॥
कहै राय चावंड । सुनौ लोहाना तुम बर ॥
न्त्रिप अग्या सिर सजौं । नतरू जानहु तुम हित हर ॥
निज स्वामि भ्रंम षंडो नहीं । हिय अरोहिय सहि हर ॥
बेरी सुलीन चावँड विहँसि । पय आरोहिय अप्प कर ॥
छं० ॥ २३८ ॥

शाही सेना की सजावट वर्णन ।

मोतीदाम॥ घट दूनति साह सजे सुरतान । जहं छच सुजी कनजीक निसान॥
गज ढालनि मालि चिह्नं दिसि फेरि । तहां रन सद्द महग्गज भेरि॥
छं० ॥ २३९ ॥

जर कंमर तोजह मेलति कंठ । तहां लष्प फरी धर पाइक गंठ॥
तहां छच मौज अदब्ब सुभार । तहां बिज्जल नाय श्रमै असवार ॥
छं० ॥ २४० ॥

तहां घन डंबर अंबर रेन । तहां अन जेबन कीवल एन ॥
तहां पार सिपै रसना रस बोल । तहां आरस के जम जेजम तोल॥
छं० ॥ २४१ ॥

तहां ढल्लनि मल्लनि फौज प्रवेस । तहां द्वादस फौज नई भर सेस ॥
तहीं तज्जिय अज्जिय गज्जन राव । तहं बज्जय सिंग मह्विष्पन चाव ॥
छं० ॥ २४२ ॥

डव ढड्डिय उड्डिय मुभ्भन केस । रही चक चौंरनि मौर सुदेस ॥
तहां दिष्षिहि फौज सु धीरन काज । मनो चव चम्म कुलंगनि बाज ॥
छं० ॥ २४३ ॥

रवि जानि डपौ दुअ बद्दल मंझ । कलकूह कुलाहल बीरति संझ ॥
उड़ि रेन रही दल दुंदभि षंग । फिरि फौज पुंडीर कुलंगनि वंग॥
छं० ॥ २४४ ॥

बजी सहनाइ निसान गुंडीर । सुलतान घरी मिलि मंझ पुंडीर॥
छं० ॥ २४५ ॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना का मोर व्यूह रच कर चढ़ाई करना ।

दूहा ॥ देषि फौज सुरतान दल । मति मंडे रन साज ॥
मोर व्यूह मति मंडि कै । तब सज्ज्यौ प्रथिराज ॥
छं० ॥ २४६ ॥

व्यूह वर्णन ।

कवित्त ॥ आरध वेस नरिंद । छच बर मुभ्भ कहि गढ्ढै ॥
सबै सेन प्रथिराज । मोर व्यूहं रचि ढढ्ढै ॥
चोंच राव चामंड । जैत द्रिग बंधि प्रमानं ॥
नष पिंडी पुंडीर । सेन उभ्भौ सुरतानं ॥
बर कंध बंध बंधी न्रिपति । पुंछ बीर कूरंभ रचि ॥
अरुनेव उदै उद्दित सुभर । मद्दन रंभ दोउ दीन मचि ॥
छं० ॥ २४७ ॥

(१) ए.-पुंडीर ।

पक्खराज प्रथिराज । जाम जद्दो घट भद्दौं ॥
रीछ मोर पष्षरी । स्यांम चमरनि गज मद्दौं ॥
स्याम ढाल ढलकंत । स्याम गजपंति विराजै ॥
स्यांम धजा झलकंत । मेघ पंतिय दुति लाजै ॥
बर नेज च्यार तहँ उज्जले । दुति सु बग्ग पंकनि बक्यौ ॥
मोर सह बीर सुरतान मुष । जिम कुरंग सम्हौ चक्यौ ॥
छं० ॥ २४८ ॥

दूहा ॥ चले दिष्ट संभौ मरद । पीन नीर रस पान ॥
उंच दिष्ट के असुर वर । चढ़ि तक्कत चहुआन ॥ छं० ॥ २४९ ॥

कवित्त ॥ मंद गयंद झरि कीच । बीच मुत्तिय झलकंतिय ॥
मनों मेघ विज्जुलिय । बनें सा नैननिदंतिय ॥
सुभर सूर बर साजि । अप्प अप्पन धर चल्लिय ॥
एक एक अग्गरे । जानि भद्रव घट हल्लिय ॥
आभरन दान बुंदनि बरषि । सक सहाब उप्पर ढलकि ॥
जद्दव सुजाम देषिय न्रपति । समनजैत बढ्ढिय किलकि ॥
छं० ॥ २५० ॥

चाहुआन सेना की श्रेणीबद्ध दरेसी और चाल का क्रम वर्णन ।

भुजंगी ॥ किलक्कंत फौजं सु मीजं दिठंनी । बने हेम जेजंम रंजं मथंनी ॥
अगी तिष्प पाइक्क घाइक्क कूदै । करं कंनरं भाल ग्रीवं स जूदै ॥
छं० ॥ २५१ ॥

उड़े डंबरं अंमरं रेन पूरी । किय कूक पुत्तारिका हक्क मरी ॥
परै भीर कंबी रनं जैत रुठी ।परें बंध कंधं हयं नार छुट्टी ॥
छं० ॥ २५२ ॥

धरै आवधं उग्गि सज्जै विमानं । तिनं नाम लीजै बरद्दाय ज्ञानं ।
सुभे सुभ्भ बाने समाने दिठाने । तहां कब्बिचंदं उपंम बषाने ॥
छं० ॥ २५३ ॥

हिमाम हिमारी हलै हेम चारी। तियं तीस जना सपरि जुद्ध भारी।
गजंगाह उग्गाह दुग्गाह कच्छै। मुसल्ली मुरल्ली अरब्बी उलच्छै॥
छं० ॥ २५४॥

सनेतं सकेतं समेतं पताषी। पषं मोर सिंधोर दामं उचाषी॥
निलं नील सम्मील उम्मील पीलं। रनक्की घनक्की[1] सचौरं ति नीलं।
छं० ॥ २५५॥

महा मीरं माहवे उमाहं उचंनी। परी पाट डोरी सकोरी दिठंनी॥
तरंतार झंडे सषं सब्ब अंसं। उड़ै देषि धीरज्ज मीरज्ज हंसं॥
छं० ॥ २५६॥

नयौ ताप आदब्ब सों जुद्धि कीजै। इसी बुद्धि भग्गै नतौ लोह लीजै॥
इसी फौज जादब्ब. कूरंभ सज्जी। नयौ ग्रब्ब गौरी सु ग्रब्बानि लज्जी॥
छं० ॥ २५७॥

दिषे षान षुरसान तत्तार दिट्ठी। छुट्यौ भ्रम्म धीरज्ज रहि निठ्ठ निट्ठी॥
मुरे षान षानं स लाजी अहारै। भये अट्ठ हज्जार हय तज्जि तारै॥
छं० ॥ २५८॥

पहर तीन तिन सों तिनं लोह तुट्यौ। मनों संझरी जानि घरियार कुट्यौ॥
छं० ॥ २५९॥

दूहा ॥ बज्जी कूह सम्मोह बर। फिरि गजराज प्रमान॥
चाहुआन बर भग्गतें। चंपि सेन्न सुल्लतान॥ छं० ॥ २६०॥

मुसलमानी सेना की ओर से हाथियों का झुकाया जाना और राजपूत पैदल सेना का हाथियों को विड़ार देना।

कवित्त ॥ रन तत्तार टट्टरै। सेंन चंपी चतुरंगिय॥
हस्तकाल बल राज। उठे गज झंपि मुषंगिय॥
पीलवांन रा रन। हस्त अंकुस गजमध्यं॥
सबर संगि उम्भरी। झरी झारिय झरि हथ्थं॥

(१) ए.-सचौरं।

उम्मडे मीर अग्गा अगर । कूह कहर पच्छे फिरिग ॥
सामंत कोइ अप्पै अषन । अप्प सेन ऊपर परिग ॥
छं० ॥ २६१ ॥

हाथियों का विचला कर अपनी फौज कुचलना और शाही सेना का छिन्न भिन्न होना ।

अप्प सेन उप्परै । परे गजराज काज अरि ॥
अस्स सहित असवार । मेर उच्छारि डारि धर ॥
सर संमुह परि पीलवान । मिट्टी मामं घन ॥
तहां चंपि हाजी । हुजाब देषंत तस्स घन ॥
सब सेन बीर भर हरि गई । गज ऊपर गज बर परै ॥
बिय बंटि रिड्डि बंछौ विषम । धाइ बीर सम्हौ लरै ॥
छं० ॥ २६२ ॥

हाथियों के बिड़र जाने पर पृथ्वीराज का तिरछे रुख से धावा करके मार काट करना ।

दूहा ॥ छंड़ि बीर गजराज मुष । तिरछौ परि सुरतान ॥
भौ टमंक दिसि विदिसि डुलि । रन रुंध्यौ चंद,आन ॥
छं० ॥ २६३ ॥

युद्ध वर्णन ।

भुजंगी ॥ करं काल डोंरू कियं सिंघ नदं । सयं सकति वादी बरद्दाय चंदं ॥
सिर स्याम सन्नाह वाहंमि चक्कं । धरे अग्र बानं सुदुर्गामि बक्कं ॥
छं० ॥ २६४ ॥

गलै राग गावंत सिंधू सगिंधू । गलै माल जा सूल कन्नै र बंधू ॥
अगे षेचरं षेतपालं बेतालं । तहां भैरवं नद्द जोगीह कालं ॥
छं० ॥ २६५ ॥

दोउ कन्न गोग्यंन कर पच मंडै । तिनं दर्सनं देषि साहस्स ग्रंडे ॥
फिरै तिष्षि निष्षी पताका तिरत्ती । सुवं जानी लागी सुग्रीषम्म तत्ती ॥
छं० ॥ २६६ ॥

टगं टग्ग लग्गी मुषं मुच्छ मोहै। बजी तीन तारी सिरे स्याम सोहै॥
लई कढ्ढि बूकी विभूती उड़ाई। भए दीह चहुआन साजे सषाई॥
छं०॥ २६७॥

दिसं अग्ग बढ्ढी सु चढ्ढी पुकारै। लिये लक्करी सेन गोरी निकारै॥
लियं लष्य सेनी सुरत्तान सढ्ढी। रनं राह वाराह बरदाइ बढ्ढी॥
छं०॥ २६८॥

हँसे सब्ब सामंत सम राज भट्टं। भइ बारही फौज एकं सुवट्टं॥
बड़े षंड पुंडीर सै तीन अष्यं। तिन मंडलाजी तुरंगी जनष्यं॥
छं०॥ २६९॥

उड़ी लोह अग्गी जर गिद्ध पंषी। भरी देषि करदाय बरदाय सष्षी॥
परे रुंड मुंडं भरं भूमि सोहै। पिये श्रोन पंचारि बारिक्क डोहै॥
छं०॥ २७०॥

चलै राह वै राह बैकुंठ भारी। घरी सत्त रवि मंडलं छिद्र कारी॥
चयं जाम रन धांम भिरि भूप चित्ते। बढ़ै धीर सों भीर सुरतान कित्ते॥
छं०॥ २७१॥

कवित्त॥ तीरब्रह्म चामंड। झंड हेमानि दंड करि॥
रजक.पत्त सिर मंडि। फौज आषंड मंडि सिर॥
उग्र अवाज नीसान। कान वीय सेन निसाननि॥
परैं पहार उत्तंग। थंभ थंथरि परि थनानि॥
नक्केरि भेरि सहनाइ सुर। सुर कपाट बज्जिय रवरि॥
अग्ग्राम जैत चामंड दल। सिंध सहाब सुप्परि दवरि॥
छं०॥ २७२॥

शाही सेना के दो हजार योद्धा मारे गए, राजपूत सेना की जीत रही।

भुजंगी॥ धमी सेन आलम्म की कूक फट्टी। जरं जंच गोरा बरं मट्ठि छुट्टी॥
करं कुट्ठि कम्मान बानं सनक्की। मनों लोर वासन्न आसन्न नक्की॥
छं०॥ २७३॥

धरं अद्ध अद्धं रनं धार धारं। करं धाम धामं मुषं मार मारं॥
गलं बध्य भिट्टं सनेही सनेहं। उभै सूर जुट्टं मनों एक देहं॥
छं० ॥ २७४ ॥
उनें स्रोन घुंध्यौ सु ऊने उनाही। भए दीन दूनं सु सज्जे सषाही॥
घटं एक को एक घुट्टै सु घुट्टै। नई गंठि मुंडा वली जोग छुट्टै॥
छं० ॥ २७५ ॥
इसो जुद्ध दीठौ न सुन्यौ कहांई। मिलै जैत षामंड सुरतान घाई॥
परै सहस दै षान भिरि चाहुआनं। बढी जैत पिष्षी सु वज्जै निसानं॥
छं० ॥ २७६ ॥

धीर के भाई और कविचन्द के पुत्र का मारा जाना।

दूहा॥ षेत परिग कविचंद सुत। परिग बंध धर धीर॥
गहिय मह षिलची परे। पसरत अट्ठ अमीर॥ छं० ॥ २७७ ॥
श्लोक॥ मानवानां च नागं च, कौरवानां न पांडवं।
गोरीयं जुद्ध हिंदूनां, न भूतो न भविष्यति॥
छं० ॥ २७८ ॥

संध्या होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम लेना।

कवित्त॥ भइय संझ दुहु बेर। षेत दुहु दीन न ढुंढिय॥
लुथ्थि लुथ्थि आहुट्टि। हथ्थ चव पंचय चढ्ढिय॥
बरन मेछ्छ वर हिंदु। स्रोन सुभयं न सुभ्भरन॥
इन अभंग घट भंग। चित्त भग्गौ जु जुद्ध रन॥
पुंडीर सत्त रन सत्त किय। बरन बीर रंभा बरी॥
अष्टमी जुद्ध मंगलन कौ। घरौ अद्ध बिय सब टरिय॥
छं० ॥ २७९ ॥

दूसरे दिवस का प्रातःकाल होना और दोनों सेनाओं में युद्ध आरंभ होना।

दूहा॥ कायर चोर चकोर बर। निसि 'घट तें' ललचात॥
सूर चकुर अरु बाल बधु। ए वछे वर प्रात॥ छं० ॥ २८० ॥

कवित्त ॥ सूर आव वर सूर । चढ़िग सामंत तुल्य घन ॥
ससिय तार उड़गन सु । ग्ग्ग बीर नंचंत फिरइ गन ॥
हाहा हूहू गंध्रब्ब । रंभ आरंभ अरुन अष ॥
अति आतुर रन चित्त । जंम जम्मन कग्गह नष ॥
बर जोग लग्ग जोती तनं । सस्त्र वाथ बर डोलई ॥
बर पंच पंच लद्धै सुबर । मुगति बंध बर षोलई ॥
छं०॥ २८१ ॥

अरुन तरुन उंदयंन । फौज पच्छै सुलतानी ॥
मिलन सूर सामंत । रेन अद्धी सम्मानी ॥
तास तुंग ववरि हि । मांम नेजे उड़ि मंडिय ॥
रवि झिंगुर झंमुषिय । हींस हींसा रव छंडिय ॥
मंडिय प्रभात नारद सवद । दोऊ सेन सज्जत रहिय ॥
इक्क वार बीर वीरह तनौ । किल किलक्कि जोगिनि कहिय ॥
छं० ॥ २८२ ॥

युद्धवर्णन । राजपूत सेना का जोर पकड़ना और मुसल्मान सेना का मनहार होना ।

भुजंगी ॥ बजें लोह कोहं सुकोहं दु दीनं । लई नाग बीरंग ते श्रोन भीनं ॥
झनक्कंत सारं किनक्कंत ताजी । मनों नट्टिवी नट्टि नागिन्न बाजी ॥
छं० ॥ २८३ ॥

बुलै घाय अघ्घाय सा श्रोत बुंदं । उठै तार झंकार ज्यों तार दुंदं ॥
उठै धींग धक्कै गजं ढाल मालं । मनों पत्त डंडूर आषाढ़ कालं ॥
छं० ॥ २८४ ॥

चंपी सेन आलंम जुरि तीन जामं । भए फौज अट्टं चवं एक ठामं ॥
परे सहस सोरह उभै हिंदु षानं । गजं बाज हज्जार तीनं सुजानं ॥
छं० ॥ २८५ ॥

समं सोमबारं सु कारंति थानं । चले लष्य दोपाल हथ्थे हयानं ॥
फिरें एकठे लष्य फिरि चंद नंदं । परे बाल लाजी तिनें नौसकंदं ॥
छं० ॥ २८६ ॥

मथी सेन आलम्म की है हिलोरं। पँगी जानि पारिष्य दरिया हिलोरं॥
अमी अव्व सेना थकी हथ्थ बथ्थं। रहे षेत सूरं मुरे क्रूर तथ्थं॥
छं० ॥ २८७ ॥

मिले मभ्भ पुंडीर हिंदू तुरक्की। मुरै मुष्य नाही सुधारै मुरक्की॥
सजे सूर सन्नाह ते हिंदु मेछं। तिके जालियै बीर जोगिंद केछं॥
छं० ॥ २८८ ॥

कढे लोह हक्की सु बक्कीं हवाई। करी दीन दीनं दु दीनं दुहाई॥
लिए हथ्थ नेजा उनंके उनाही। रहे हल्लि नेजा न हल्लै हलाही॥
छं० ॥ २८९ ॥

सतं अड्ड अट्ठं कमट्ठं स उट्ठै। जिनें मोह माया रसं बंधि छुट्टै॥
भषै जंबुकं गिद्धि सीवंत हस्सै। फुटी सांग हथ्थं तिरच्छं सुलस्सै॥
छं० ॥ २९० ॥

कहै हक्क बाजी विराजी सु गाजी। घटं कंध तुट्टै किनं कै सु ताजी॥
उड़ी श्रोन छिंछी छबी लग्गि बिंदू। दहै द्राह अग्गौ मनो दार तिंदू॥
छं० ॥२९१ ॥

कढी तेग तेगं जु तेगं चमंकी। तहां तब्बरं तुंद सीरं दमंकी॥
तजे दीन दीनं दुहुं अंस भारी। मिले बंध बधं सु जोधं करारी॥
छं० ॥ २९२ ॥

ततथ्थे ततथ्थी करैं थंग थंगं। नरैं रंग भैरो बितालं उतंगं॥
कढे रुद्द रद्दी विरुद्धं विचारी। रुरै दंत दंती विकस्संत सारी॥
छं० ॥ २९३ ॥

बजे घाय आवरत सावरत रुक्कै। मनों चच्चरी डिंभरू तार चुक्के॥
नचें बंधं कंधं कबंधं सवानं। मनों ससि भेषं पक्षी चौज कानं॥
छं० ॥ २९४ ॥

सरं तंज दीसें परंतं न दीसं। मनों भूतमाया कुरी जोग ईसं॥
इकै सांग बाही इके तेग साजी। मनों नग्गनी जीह भुकि रत्तकाजी॥
छं० ॥ २९५ ॥

कढी एक सथ्थं उचं हथ्थ उंचं। झलक्कै सु षग्गं महातेज संचं॥
तिनकी उपम्मा कही चंद वक्कं। दिसी पच्छमीजानि उगयौ अरक्कं॥
छं० ॥ २९६ ॥

लई षीझि कम्मान सुरतान गोरी। फुटै पष्षरा अस्स भै विभ्भ जोरी॥
परे सब्ब षानं महामीरबानं। मनों प्रात तारै दिषै थान थानं॥
छं० ॥ २९७ ॥

महारुद्र बीरं भयानक्क दीसं। लगे जोगिनी रीस तादंत पीसं॥
[1]रसं साहि गोरी अदं बुद्ध कंदं। भयौ सूर प्रथिराज परभात चंदं॥
छं० ॥ २९८ ॥

धीर पुंडीर का धावा करना।

षुलें टोप लोल्लंत बोलंत सूरं। लिये चोर तोरं मरोरंत मूरं॥
पर्‍यौ धाइ पुंडीर तेजी पटाढ़ी। जिने बोल षुच्चै मुषं मुच्छ डाढी॥
छं ॥ २९९ ॥

इसौ चंद बच्चा विरच्च्यौ सु तामं। करी अट्ठ चव फौज एकं सुठामं॥
चंप्यौ जानि कें जम्म सुरतान सादे। कह्यौ षान जादे कुसादे कुसादे॥
छं० ॥ ३०० ॥

कह्यौ छंडि ताजी सु को बोल पीलं। बढ्यौ बाय बेगं मनो धूम झोलं॥
मिली चारि अंषी अनी दिट्ठ दीनौ। उनें हथ्थ ठिल्ल्यौ इनै सिंहलीनौ॥
छं० ॥ ३०१ ॥

दुहुं हथ्थं षुल्लै हलक्कै सु बथ्थै। कहै दूैव देवन्न जोगिन्न सथ्यं॥
महाचंद पुत्तं सबीरं लुहानं। कहै तेन बोलंत आवं सुहानं॥
छं० ॥ ३०२ ॥

झंडा माह बैरक्क दिट्ठी सुरानं। हंसै सब्ब सामंत पुंडीरं मानं॥
उनै उत्त मंड्यौ जु षंभं प्रमानं। लियौ सिंह ताजी सु हेमं समानं॥
छं० ३०३ ॥

उतें मंडली मेछ जोरी सु साजं। इतें हिंदू साजे प्राथीराज काजं॥
कहै सिंध सामंत सूरं लुहानं। परै अप्पनै काम कनवज्ज थानं॥
छं० ॥ ३०४ ॥

दियं च्यार देसं सु पुंडीर रायं। कह्यौ अप्प पतिसाह धीरं सुनायं॥
छं० ॥ ३०५ ॥

(१) ए. सर्स।

धीर की सहायता के लिये पिशाच मंडली सहित देवी का आना।

कवित्त ॥ चवदह सें बर बीरं। भए भर धीर सहाई ॥
जालंधर जगमात। जैत करिबें को आई ॥
भैरव भूत भयंक। भए तहां आनि सषाई ॥
ईस सीस कारनै। दई तहां आनि दिषाई ॥
सुचि चंद जेम न्रप चंद सुअ। घट घट प्रति प्रति ब्यंब हुअ ॥
सामंत सूर इम उच्चरै। बलि बलि बीर भुअंग भुअ ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

महादेव का पारबती को गजमुक्ता देकर कहना कि वीर धीर को धन्य है।

दूहा ॥ ईस सीस लिय माल कजि। गौरा कजि गज मुत्ति ॥
पिया समंपति मुत्ति पिय। चिय प्रिय पुच्छत बत्त ॥ छं०॥३०७॥
सीस सदा सिवल्यावतें। मुत्ति लहै कहों आदि ॥
कोन धीर पहिरो असन। धीर बीर सु प्रसाद ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

पारबती का धीर के विषय में पूछना।

पारबती कह्यौ कोन सुत। कहा पराक्रम कीन ॥
पाट पुंडीर सुचंद सुअ। ब्रह्म रूप परवीन ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

धीर की बीरता का वर्णन।

कवित्त ॥ इसौ धीर बर वीर। जिसौ पारथ भारथ्थह ॥
इसौ धीर बर बीर। जिसौ पारथ सारथ्थह ॥
इसौ धीर बर बीर। जिसौ जोधा दुरजोधन ॥
इसौ धीर बर बीर। जिसौ हनमंत बलिय सन ॥
सुतचंद दंद दारुन दुअन। अग्निरूप चिन सत्तु जन ॥
मन मोह रोह माया रहित। अंगंद जिम अंग धीर तन ॥
छं० ॥ ३१० ॥

पारवती का प्रश्न कि क्षत्री जीवन का मोह क्यों नहीं करते।

दूहा ॥ जिहि जीवन कारन जगत । बंछै लोक विचार ॥
करै सुध्रम्म सुक्रम्म अति । किम तजि छत्रिय सार ॥
छं० ॥ ३११ ॥

शिव का बचन कि क्षत्रियों का यह कुल धर्म है।

गाथा ॥ तपस नष्ट अतोषौ । संतोषो नष्ट नरपति ।
लज्जा नष्टति गनिका । अनलज्जा नष्ट कुल जाया ॥
छं० ॥ ३१२ ॥

दूहा ॥ धरा सहित नंघै सु धर । सीस जाय घर जीय ॥
मरन सीस लीनै वहै । कुला क्रम पचीय ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

जीवन मरन की व्याख्या।

कोन मरै जीयै कवन । कोन कहां बिरमाय ॥
प्रानी वपु तरु पंषिया । तरु तजि अन तरु जाय ॥ छं० ॥ ३१४ ॥
ज्यों औरन परधान तजि । नर जन धरत नवीन ॥
यों प्रानी तजि कायपुर । और धरे वपु भीन ॥ छं० ॥ ३१५ ॥
कबहूं जीव मरै नहीं । पंचतत्व मिलि भेद ॥
पंचौ पंचन में समें । जीव अछेद अभेद ॥ छं० ॥ ३१६ ॥

आत्मा की व्याख्या।

मोतीदाम ॥ अछेद अभेद अषेद अपार । अजीत अभीत अप्रीत अमार ॥
अमोल अभोल अतोल अमंग । अकंज अगंज अलुंज अभंग ॥
छं० ॥ ३१७ ॥
असेष अभेष अलेष अबीह । अरेप अमेष अदेष कबीह ॥
अमान अभान अजान अलिप्त । अचान अज्ञान अवान असिप्त ॥
छं० ॥ ३१८ ॥

संसार में कर्म मुख्य है कर्म से जन्म होता है ।

गाथा ॥ कर्मं वस्य नरं जीवं जं कर्मं क्रियतं सो प्राप्ति ॥
कर्मं सुभं च असुभं । कर्मं जीव प्रेरकं प्रानी ॥ छं० ॥ ३१९ ॥

स्लोक ॥ नमे न बध्यते कर्मं । कर्मेन बंध प्राप्तिकः ॥
यं कर्मं क्रियते प्रानी । सो प्रानी तत्र गच्छति ॥ छं० ॥ ३२० ॥

दूहा ॥ औसरि दुअ जुट्टे सुरन । भ्रत सोभत इन भंति ॥
अगर भंज जनु द्वै भिरै । मय मत्तें मय मंत ॥ छं० ॥ ३२१ ॥

शूर वीरों की वीरता और उनका तुमल युद्ध वर्णन ।

विराज ॥ मयमत्त भिरे, फिरि जुद्द घिरे । तरवारि तरैं, तकि घाव करैं ॥
छं० ॥ ३२२ ॥

जमदट्ठ जुरैं, तिय नीति मुरैं । पन सूर मुषं, न मुरंत नषं ॥
छं० ॥ ३२३ ॥

इस भ्रत्य इसें, जमरूप जिसें । नर मध्य नचैं, हरहार रचें ॥
छं० ॥ ३२४ ॥

धर उट्टि धरं, सजतें समरं । भभकै भभकं, रुधिकैं लभकं ॥
छं० ॥ ३२५ ॥

जुगिनी जितनी, किलकें तितनी । ततथे ततथे, नचि बीर नथे ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

गुरगात भरं, कच उंच करं । तिन कढ्ढि तनं, बढि रंभ बनं ॥
छं० ॥ ३२७ ॥

दंत ऐंच दंती, कटि सूर कंत्ती । भिरि एम भरं, जनु सिंघ जुरं ॥
छं० ॥ ३२८ ॥

गाथा ॥ जुद्ध करंते जोधं । जै जै जंपि असुर ससुरानं ॥
कुट्टै इम किरवानं । लोहं लोहार कुट्टै घन एनं ॥ छं० ॥ ३२९ ॥

धीर की विलक्षण हस्तलाघवता ।

दंडक ॥ धीरक्कर धरिकै किरवानह । धाप धपै धपतौ वर वानह ॥
थाट विथाट करं दल ठेलत । घाट कुघाट किए घट षेलत ॥
छं० ॥ ३३० ॥

बाटनि बाट करी अति भीतर । लोटत लोटत ज्यों बन बिंतर ॥
बाढ़नि बोढ़ दिए तरवारनि । बालर बाढत भील पहारनि ॥
छं० ॥ ३३१ ॥

सीसन पीस किये सिरदारन । पी भज भाजन चीलषि जारन ॥
सेलन मेल सनंमुष मंडहि । झेल विझोल करा झर झंडहि ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

ढेरत हथ्थ उधेरत पंजर । षंडत षग्ग षसे रत षंजर ॥
छं० ॥ ३३३ ॥

शहाबुद्दीन का घोड़ा छोड़ कर हाथी पर सवार होना ।

कवित्त ॥ ऐ सहाब सुलतान ! तुरिय छंडवि गज चढ्यौ ॥
धीर बीर सम्मूह । रोस संमुह बर बढ्यौ ॥
है समेत असवार । हक्कि पुंडीर सु चंपै ॥
जिमि मुष्यह जमरोज । चंद नंदन नह कंपै ॥
कढि कटार गज तोलि हित । राह अधम रवि जुद्ध लरि ॥
कट्टार नंषि प्रग्गह कढ्यौ । करिय सीस सिर लोह झरि ॥
छं० ॥ ३३४ ॥

धीर का हाथी को मारना और शाह का जमीन पर गिर पड़ना और धीर का शाह को पकड़ लेना ।

उडिग रेन गय नंग । साहि संमुह गजि पिल्ल्यौ ॥
धनिव धीर पुंडीर । साहि सनमुष असि मिल्ल्यौ ॥
दसन तुंड किय दोन । मुंड छंडिय सुंडाहल ॥
गिरत भूमि सुरतान । षान कीनो कोलाहल ॥
झक झोरि तोरि अवझरि उजरि । गहि हमेल हम्मीर लिय ॥
हय कंध डारि अड्डो असुर । पैज पुंडीर प्रमान किय ॥
छं० ॥ ३३५ ॥

धीर का तलवार चलाते हुए शाह के हाथी तक पहुंचना।

षग कढ्ढत सुरतान। अप्प मनि भय हय चढ्ढिय॥
धर.ततार इक षंचि। सिंगि रंगिय रुधि मंडिय॥
हनिव हथ्थ पुंडीर। धीर धर फट्टि सनाह्यि॥
अनु कि प्रात आवत्त। ब्रह्मपुर पंच समाहिय॥
उर फुट्टि पंच टट्टर करह। बर बिड़ुरि षग्गह डरिय॥
गहि दंत मंत सुनि सुनि सुनिय। झमकि.झमकि बिजुरिय झरिय॥
छं० ॥ ३३६ ॥

शाह के अंग रक्षक योद्धाओं का शाह को बचाना।

साहि पास सौ मीर। दुहूं उभ्भै दुहुं पासं॥
उभ्भै अग्ग सु विहान। बान अरजुन प्रति मासं॥
कंजानी कम्मान। बानं सु विहान तोन तिय॥
तेही वेर हुसेन। दिष्ट दैषी घुरि अत्तिय॥
तव साहि हथ्थ कम्मान लै। षिंभि करि कुंडलि कन्न बर॥
तन फुट्टि लुट्टि हुस्सेन पर। रोस परिग परि मीरं धर॥
छं० ॥ ३३७ ॥

मुसल्मान योद्धाओं का पराक्रम और हुसेन सुविहान (सुभान) का मारा जाना।

एक बान सुविहान। षान हुसेन चढ़ाइय॥
दूजै बान तकंत। बंध धीरह टाराहिय॥
तक्कि बान तिय साहि। भरकि भग्गौ हिंदवानं॥
सकल सूर सामंत। करै अस्तुति सु विहानं॥
पट बान कमान जु नंषि करि। अरि दिसि हरि चक्कह चलिय॥
कढि तेग मुट्ठि छुट्टै नहीं। दिन पलट्यो सु विहान जिय॥
छं० ॥ ३३८ ॥

ढारि जंग जुरि जूह। जूह गजराज ढंढोरिय॥
ढाल मड्डि ढंढोरि। बीर अविहरि दल मोरिय॥

दल मोरे षुरसान। षान षुरसान बहोरिय॥
बहुरि धीर जंजाल। करन वाहिर बहुतेरिय॥
तेरिय सु बीर चतुरंग वर। वीर वीर वीरं कहिय॥
अच्छरी वीर रस भर सुभरि। भेद भेद नै छच रहिय॥
छं०॥ ३३९॥

गुन रन मूंदे सेस। छंद सुम्भर आलिय भुअ॥
दुष सुष मया विमोह। क्रोध रँग बीर सकल हुअ॥
अहहं हंती हंत। रंत दंतन धरि दंती॥
मनु मराल लै चित्त। दंत मुरलाल रलंती॥
धर बोल परै सुरतान नग। पूजु पुट्ठि तें पुट्ठि वर॥
दल ढुंढि फिरावन एक दल। ग्रह्यौ सोहि गोरीहु भर॥
छं०॥ ३४०॥

पुंडीर की पैज का पूरा होना।

धीर बचन सुनि साहि। दिट्ठ मरदां बिष जोरन॥
धीर तंकि सुरतान। साहि तक्के उन तोरन॥
ठेलि गज्ज, हय पत्ति। अश्व ठेल्यौ पुंडीरं॥
कढ्ढि बंक सो तेग। हन्यौ गज सीस सु भीरं॥
निह टीब बींज बद्दल विहर गज्ज परिग गजपति कहिय॥
हय कंध डारि अट्ठो असुर। पैज पुंडीर प्रमान किय॥
छं०॥ ३४१॥

पुंडीर के पैज निर्वाह की बधाई।

भुजंगी॥ गह्यौ साहि हथ्थें जु पुंडीर रानं। कहै सूर सामंत पैजं प्रमानं॥
हन्यौ एक गज जूह कोटं प्रमानं। कहै देव देवं जु भारथ्थ जानं॥
छं०॥ ३४२॥

कहै चंद बत्तं समंदं रहानं। तहां चंद सूरज्ज कित्ती भषानं॥
अश्वनी कुमारान वासी कहानं। जिसो पथ्थ पंडीस जोधं रचानं॥
छं०॥ ३४३॥

कहै चंद कित्ती सु बेली भषानं। रहै झिल्लि मेलं सुरत्तान सानं॥
जिते राव चावंड सही अभानं। अहो धीर पुंडीर पैजं बखानं॥
छं० ॥ ३४४ ॥
उवं षंड हथ्थं रुधी धार पानं। हिमं जा समानं जु सीहं पलानं॥
कियौ स्वामि कै काज पैजं प्रमानं। * * छं०॥३४५॥

कवित्त ॥ नव सें जंहां सिलार। पास ठट्टे हंमीरह॥
एक लाष सांहन समुंद। चवकोदह भीरह॥
बेद लष्य तरवारि। सघन नेजा पसरंतह॥
अट्ठ लष्य गुर धार। मेघ जिम झरबर संतह॥
पुंडीर राय कालंह सरिस। भिन भुअंग चित्तह भन्यौ॥
बीरंग बंस चंदह तनौ। साहि गह्यौ हथ्थी हन्यौ॥ छं० ॥ ३४६ ॥

शाही सेना का सब रखत छोड़ कर भागना।

सिंधु सहाब उप्परह। जैत संग्राम धाम रन॥
छत्र दंड वर चमर। दंड छंडिग सु गंध घन॥
तुरस तोरि मवरिय मरोरि। रवरिय दल बद्दल॥
जनु निदंत दच्छिनिय। पाइ ठिल्लिग सुभट्ट षल॥
मुनि नयन गयन लग्गिय अगनि। पल पलाय गौरिय सयन॥
सो सह वह दस दिसा हुअ। ग्रह्यौ ग्रह्यौ बुल्लिय बयन॥छं०॥३४७॥

शहाबुद्दीन के खवास सेरन का घर पहुंचना और उस की स्त्री का उसे धिक्कारना।

बिय षवास सेरन सु नाम। गोरिय गयंद कुल॥
तिहि सु सत्त जोरू सु व्रत। रोचि निय ध्रम्म बल॥
सय सिंदू कुल परह। ताहि दिट्ठो गज कन्ना॥
पंन पानि पति साहि। हाथ असहा बह बन्ना॥
उच्चार भार बुल्लिय बयन। निय जुबद्दि पति साह तहां॥
आभ्रमहार कुच भारवर। सुनित स्वामि संसार कहां[1]॥
छं० ॥ ३४८ ॥

(१) ए.-कज-कृ.-कय।

सेरन का उत्तर देना कि मैं तेरे मारे लौट आया हूं अच्छा अब शाह को छुड़ा कर तब रहूंगा।

मे पावस अभ्भरियं। गिरिय घेरिय जनु मुक्के ॥
स्वामि मंच बरषंत। फेरि हिंदुअ दल लक्के ॥
तुव नेहिय देहिय निवाह। किं जाम कोह दह ॥
पुनि सुट्टौ सुलतान। हाउ जहां भाउ ग्राम ठह ॥
मंजाह लाज अभ्भझह रवनि। रवन सुष्प देषै मरद ॥
काम तरुनि करुनिय करन। उज उड़ाय सुक्किय गरद ॥
छं० ॥ ३४९ ॥

पुनः स्त्री का कहना कि स्वामी को सांकरे मे छोड़ कर घर का स्नेह करने वाले सेवक का जीवन धिक है।

ताइय तुह कामिय सु काम। कामनिय काम रत ॥
अप्प ध्रंम तजि स्वामि। ध्रंम छंडौ सनेह हित ॥
आय देह संदेह। देव देवन संचारहि ॥
आय धार बजि मार। मार मारन मन हारहि ॥
अंजिसिय हंसिय अंतर गसिय। ससिय सड उड्डर धसिय ॥
मम्मुड दुड दोजिगन चलि। उर अंकुस फेरिय रसिय ॥
छं० ॥ ३५० ॥

सेरन का युद्ध की विषमता का वर्णन करना।

कर ककस करिवार। खूर बद्दल दुति छुट्टिय ॥
पग्रत भोमि रोचनिय। सस्च पुट्ठी अलह फुट्टिय ॥
रवरि दवरि हिंदुअ। नरिंद अत धरयं सुरतानह ॥
परि पारस पुंडीर। हथ्थ देषिय सु विहानह ॥
हहकारि हक्कि बोल्यौ सु बर। सु सब मुंकि सुरदार भष ॥
उन देव धीर चंदह ननौं। मनों सिंघ दष्यौ जु चष ॥
छं० ॥ ३५१ ॥

सेरन का कहना कि शाह के छुड़ाने का भार वैजल खवास पर है।

चष दिष्षिय सक सिंघ। सेर ध्रंमह सुरतानह ॥
कर कढ्ढिय जमदढ्ढ। बढ्ढ बढ्ढन तुरकानह ॥
मवन उंच तिहि नेज। सेज उच्छंग उछारिय ॥
जनु कि सिंघ सावंग। उड्ड डंमर उप्पारिय ॥
उर कररि मुट्ठि दिट्ठौ दुअन। सम छुट्टत सुरतान कह ॥
विज्जल षवास छप्पर गलसु। गलग ढलगि भूमिय सु वह ॥
छं० ॥ ३५२ ॥

किन्न कंक चहुआन। कंक महमंद सवन्निय ॥
ठिल्लिग ठट्ट उट्टाय। कोट बज्जे बर बन्निय ॥
परे मत्त में मंत। दंत अंतिय आल,झिभ्भय ॥
जनु कि केलि बिन पोन। बेलि बंकिय बलि बुभ्भि्भय ॥
संग्राम धाम धुंधर धरनि। धरनि पहर बज्जिय लहरि ॥
ता पच्छ जाम जहों सुरन। अवसि मेव उत्तरि विवरि ॥
छं० ॥ ३५३ ॥

उत्तर वै सुरतान। बंधि धीरह धर नंषिय ॥
सुर नर गन गंध्रब्ब। चंद बंदिय सद भष्षिय ॥
भग्गा भर सुरतान। आनि बरतिय चहुआनं ॥
कासमीर ढिल्ला पहार। ठट्टा मुलतानं ॥
जित्ता जुवान सोमेस सुअ। दुमसि बज्जि बज्जे इहां ॥
जै जया सद्द आयास भौ। सु कविचंद छंदे जिहां ॥
छं० ॥ ३५४ ॥

नीसानी ॥ नेजे नंनीं सेरवान धरधार उपन्ना।
तिस का हथ्थ विहथ्थ वान बघघां बर जन्ना ॥
तिस कै कुंडल चष्षवान नहि दिठ रहन्ना।
पाई पूना धंष देह दुहरी भर थन्ना ॥ छं० ॥ ३५५ ॥

जानै छुट्टा इक्क माइ बोरह बिरुझंना।
दूनै झूझ अलुझि झया हिंदू तुरकन्ना ॥
बिरष बोल उट्ठाइआ जाने थुतिकंना।
हो अल्लिधीर दुराइया सेरन बर बन्ना ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

जैतराव और तत्तारखां का युद्ध। तत्तार खां का मारा जाना।

कवित्त ॥ घरिय पंच पामार। जैत जग हथ्थ उहन्ना ॥
है सो है गै सो गयंद। नरों नर हथ्थ निहन्ना ॥
निहसि निहसि झन झनिय। षग्ग षग्गा षग भग्गा ॥
कट्टारिय कट्टारि। मार छुल्लिका छुल्लि जग्गा ॥
है कंप हक्क जूटा सु घट। कुघट कटार कटंत घट ॥
तत्तार षान जुरि जैत सों। निहसि नियाहि निहंद हट ॥
छं० ॥ ३५७ ॥

परयौ षेत्र तत्तार। षेत जैतह गल लग्गिय ॥
उभयं सहस पट्ठान। सहस पामार स भग्गिय ॥
चंपि राव चामंड। अगि अगिवांन उचाये ॥
जांदों षान उभारि। बाय बादल उट्टाये ॥
षंगिय सु पद्य दाहर तनौ। घर बिरह छज्जै मदह ॥
दाहंत दाह दुल्लह मरन। जिहि सु हिंदु रष्षीह दह ॥
छं० ॥ ३५८ ॥

विजय की सुकीर्त्ति के भाग।

पंच भाग पामार। भाग चामंडराय तिय ॥
उभय भाग जद्दों जुवान। जैपत्त हथ्थ लिय ॥
एक भाग प्रथिराज। अद्ध भागह बरदाइय ॥
पाव भाग पज्जून। राव मंडी मरदाइय ॥

भग्गाह अट्ठ पुंडीर भुज । जिहि सु साहि सद्ध्यौ समर ॥
धम्मो जयंत विस आध अध । लिखि कवित्त छद्ध्यौ अमर ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

दूहा ॥ राय पुंडीर सु झूझ जिति । ग्रिह आयौ प्रथिराज ॥
डोला पंच प्रचीस रजि बिय आदीत बिराज ॥ छं० ॥ ३६० ॥

कवित्त ॥ गहिव साहि करि पैज । जुद्ध जित विग्रह पत्तौ ॥
षेटति पब पाषंड । भेद सामंत निघत्तौ ॥
रिन रवद्द जित्तिग । नरिंद वाजे बज्जाने ॥
नहि हिंदू कढ़ितेग । सद्द बज्जे सद्दाने ॥
दिष्षहि न राज सुरतान कहुं । सक सहाब षुरसान पति ॥
पूंछत बत्त भग्गो भिरा । रह्यौ न जुध रोह्यो [1]रुसति ॥
छं० ॥ ३६१ ॥

मलिक षान षुरसान । हनिग लष षग्ग धीर बर ॥
गज मै मत्त स घारि । दबटि दल मथ्यौ सबलकर ॥
लियौ साहि गहि हथ्थ । सथ्थ देषत सुरतानो ॥
षां ततार रुस्तमां । सीस धूनहि विलषानो ॥
पुंडीर सहस तिय षेत रहि । गह्यौ साहि गयौ धीर घर ॥
पुंडीर चंद नंदन रनह । मेछ गह्यौ चालेत धर ॥
छं० ॥ ३६२ ॥

दूहा ॥ सहिय संगि सनमुष्ष सर । पानि ढरि मुलतान ॥
जैत पत्त रावत्त हुअ । बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ ३६३ ॥

वैजल का धीर से कहना कि शाह को छुडा दो
और धीर का उत्तर देना कि पांच
दिन ठहरो ।

चामर छच रषत्त रन । ए लुट्टे सब कोय ॥

(१) को. हसति ।

बर षवास बैजल्ल कह्यौ। धीर निहोरैं तोहि ॥ छं० ॥ ३६४ ॥

कहै धीर बैजल्ल सुनि। पंच दिवस नन कथ्थ ॥
गुदरो मति राजान सों। साहि ग्रहन सें हथ्थ ॥ छं० ॥ ३६५ ॥

गुरि न गयौ गोरी घरह। पत्यौ न षेत प्रमान ॥
उक्कति बंधि प्रथिराज चित। धीर ग्रह्यौ सुरतान ॥
॥ छं० ॥ ३६६ ॥

बैजल का पृथ्वीराज से शाह के छोड़ जाने की विनती करना।

करि मालम बैजल्लि सु तब। समह राज चहुआन ॥
पुरिन गयौ गोरी घरह। धीर पकरि सुरतान ॥ छं० ॥ ३६७ ॥

चौपाई ॥ इह सुनि राज अप्प ग्रह आइय। कहिय धीर सों बेजल धाइय ॥
षंडौ काटि आय षावासह। तबें बेजला बोल्यौ तासह ॥
॥ छं० ॥ ३६८ ॥

धीर का कुपित होकर बैजल का मारने के लिये दपटना।

इह सुनि क्रोध धस्यौ मन धीरह। बरज्ञी बत्त कही क्यों हीरह ॥
मारन असि कढ्ढी षावासं। प्रथीराज बरज्यौ तब तासं ॥
॥ छं० ॥ ३६९ ॥

पृथ्वीराज का धीर की वीरता की प्रशंसा करके उसे समझाना।

कवित्त ॥ गरजे वे संभरि नरेस। अरि विग्रह मंड्यौ ॥
पुरनि षेह ल,क्कयौ। ग्रभ्भ ग्रभनी जु छंड्यौ ॥
चंद तनौ पूरन सु चंद। तिहि ठां संचरयौ ॥
मारे मत्त मयंद। धनि सु धनि धनि तहां करयौ ॥
दुहु दलन म्रीच मच्छर कह्यौ। हाक्यौ हन्यौ पचारयौ ॥
सुरतान साहि साहाब दी। गहिब धीर रन पारयौ ॥ छं० ॥ ३७० ॥

सुंडा डंड प्रचंड। मुंड षंडनौ षरक्यौ ॥
सिल्लारां असि तेज। वीज उज्जलौ झलक्यौ ॥
गहि गोरी गंजयौ। गहिव भुत्र बल उप्पात्यौ ॥
राय सरिस सामंत। पूरि धर रुहिर पषात्यौ ॥
झगरौ जु प्रभन्न्यौ जैत करि। तातन टट्टर अभय हुअ ॥
सो असिवर सज्जत वे जलहि। धीर लज्ज लग्गै न तुअ ॥ छं०॥३७१॥

धीर का कहना कि इसने मेरे मना करने पर भी क्यों कहा।

स्वामि वचन बिन सुनै। क्लान लगि कहि इह बत्तिय ॥
तूं पामर बरजयौ। पंच दिन कथ्य न कथ्यिय ॥
जैतराव चामंड। राव जद्दव जामानिय ॥
कूरंभा पज्जून। गरुअ गुज्जर रा मानिय ॥
सनमान राज चहुआन दल। भरत बिनोद मंडत रसन ॥
तिहि रीस सीस पामर पिसुन। करौं षग्ग मग्गह असन ॥
छं० ३७२ ॥

पृथ्वीराज का पुनः धीर का समाधान करना।

चिपति न किय तो षग्ग। हनत कर करिय चन्दसुत्र ॥
त्रिपति न भय गोरिय। नरिंद सुलतान मंत धुअ ॥
चिपति न ढल्ले लाल। मल्लवाहन उब्भारत ॥
चिपति न गज गुरइंद। बिंत उप्पर उप्पारत ॥
चिपतौ न तुअ पुंडीर मुअ। सुरतानह बंधत बसन ॥
बंगिय बखान वैजल विजल। न करि बग्ग मग्गह असन ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

षग्गझार परिया। चंद वचा हसि सद्दे ॥
मैं बरजिय दिन पंच। पीय पामर कह बद्दे ॥
पाउ लागि प्रथिराज। वाह दीनी प्रथराजं ॥
दसहजार है वरव। दंडि छंडिय सुलतानं ॥

दिट्ठाह दिट्ठ ऊची करी। गय गोरी ग्रह्वह गरिय ॥
आसन मुछंडि उभै हुऐ। करि दुवास चंदह धरिय।
छं० ॥ ३७२ ॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर शाह को छोड़ देना और शाह का लज्जित होकर राजा को धन्यवाद देना।

दंड सीस सुलतान। तीस गजराज मत्त मद ॥
पंच सत्त एराक। सुतर लष तीन उनंमद ॥
वहु विभूति चतुरंग। डंड मान्यौ षुरसानो ॥
वर गोरीं सुलतान। बंधि मुक्यौ चहुआनो ॥
आजान बाह संगह न्रपति। दंड काज सथ्यह दियौ ॥
षुरसान षान भोरी न्रपति। सुबर साहि सथ्यह लियौ ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

पाय घालि प्रथिराज। बांह दीनी सुलतानं ॥
करि सलाम तिहुं बार। धरिय अंगुरिय तुरकानं ॥
तुम उभाह दुग्गाह। बार बारह चढ़ि आवहु ॥
बज्रहीन दुअट्टीन। किया अप्पना सु पावहु ॥
नन करहु सह जुग्गिनिपुरह। बांधि सामंतह मुक्किया ॥
बारह सुवार आवंत इहां। जाय सुषासन सुप्पिया ॥
छं० ॥ ३७४ ॥

शाह को छोड़कर पृथ्वीराज का संयोगिता के साथ रस रंग में प्रवृत्त होना।

पकरि छंडि सुलतान। दंड पुंडीर समप्पिय ॥
ता पच्छै प्रथिराज। केऊ दिन तप्पन तप्पिय ॥
आनी पंग कुंआर। रूप धरनी धर धारह ॥
जिन लीनें सामंत। नाथ बहूनि बरबारह ॥
मत्तान षत्त सूता रहें। प्रच लिहं दे देव दिन ॥
उब्बाह बाह कबिचंद कहि। सत सु छुट्टै स्वामि रिन ॥
छं० ॥ ३७५ ॥

सामंतों और पृथ्वीराज का धीर से कहना कि तुम शाह को छोड़ दो।

हनुफाल ॥ प्रथिराज सामंत सब्ब। पुंडीर धीरज्ज तब्ब ॥
तू छंडि गोरी साहि। मो इहै बोल निबाहि ॥
छं० ॥ ३७६ ॥
तूं सर्ब सामंत सूर। प्रथिराज थप्पिस पूर ॥
तूं करै सब दिन पान। मन धुर मिष्ट बानि ॥ छं० ॥ ३७७ ॥
उस्र दिष्टि मंडिय राज। कनवज्ज देषन काज ॥
उन राज काज सुभग्ग। कलहंत कास समग्ग ॥ छं ॥ ३७८ ॥
तुस्र छंडि मंडि सुभेद। हिंसार कोट सुभेद ॥
पुंडीर छंड्यौ साहि। प्रथिराज सामंत मांहि ॥
छं० ॥ ३७९ ॥
चंद राज सुमंडि। चौवार पहुमि सुषंड ॥
उस्र मंच राज विनास। कलियंग छच सुतास ॥
छं० ॥ ३८० ॥
इय मंडि कीरति चंद। तिहि गज्जनै सुत चंद ॥
चिहुं चक्र दे सजि धक्कि। जिहि चन्द सूरज सष्य ॥
छं० ॥ ३८१ ॥
जिहि पातिसाह सुसाहि। तो धीर धन्नि सुमाय ॥
* * * * * * * ॥ ३८२ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुमने शाह को किस तरह पकड़ा।

कवित ॥ असिस्र लष्य साहन ससुह। दस्स सै गयंदह ॥
धरनि धसय उड्डसय। बोल नहि गुर सुर छंदह ॥
तहां तिमीर झंमंभि। गोल हबसिय हय हंकहि ॥
तहां धानुक पाइक्क। अप्प अप्पन पय तक्किहि ॥
तहांति भेछ गज्जहि असुभ। मनो घोरि पावस रच्यो ॥
इम कहत साह पुंडीर सों। किम सुसाहिते संग्रह्यौ ॥
छं० ॥ ३८३ ॥

धीर का रण का सब हाल कहना और पृथ्वीराज का शाह को सिरोपाव पहिनाकर सादर गजनी को विदा करना ।

चोटक ॥ जहां हिंदुअ साहि लरंत रिनं । तहां बान परै बरसा सुघनं ॥
जु करै किरिवारिय हिंदु अमेछ । लहंगिय बालक षेलहि एछ ॥
छं० ॥ ३८४ ॥

परे गुरजे रिन गाजरि सूर । सजे रन साहि सुहिंदुअ पूर ॥
तेहँकि हमीर किए इक टौर । गयंदहि साहि गयौ गजि जोर ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

यहीं परिढिल्लिय साहि करी । करिवार कुँभस्थल बीज भरी ॥
तबही धर धुक्कि गयंद गयं । लिय साहि गयंदति षोचि लियं ॥
छं० ॥ ३८६ ॥

इय लाज प्रताप तें राज रही । गज्जनेस असंभिय ईस गही ॥
विकसे प्रथिराज पुंडीर हियं । अद्भूत पराक्रम धीर कियं ॥
छं ॥ ३८७ ॥

इम जंग-जहां रन सोर हुअं । नह आवन पास लहे सुतुअं ॥
तब जंपिय धीर धरन्नि धुअं । न्रिप संभरि जंग प्रताप तुअं ॥
छं० ॥३८८॥

तब साहि हजूर पुंडीर कियं । भरि अंक प्रथीपति मेछलियं ॥
बहु पुच्छिय प्रीति समाजि तदं । तुअ दिष्षत हिन्दु अ सुष्ष हदं ॥
छं० ॥३८९॥

पहिरावन्नि साहि करी प्रथिराज । दिये तब अंबक बाजन बाजि ॥
दिये सत तीन तुरंग सुरंग । करिवार कटार जरे हिम्म नंग ॥
छं० ॥३९०॥

पहिराइय साहि दिबंगम बस्त्र । दिए षटतीम अनूपम सस्त्र ॥
षट भोजन भाव सुभष्ष लियं । जु सुगंध अनेकति पूर कियं ॥
छं० ॥ ३९१ ॥

इमयं मंझि मानिय पूर भयं। पहचाइय कोस इकं न्रपयं॥
इम जित्तिय जंग सुदिल्लि नरेस। सामंतन मद्धि पुंडीर थपेस॥
छं० ॥ ३९२ ॥

करै सुष राज बिलास सँजोग। हिमवंत महारिति भोगहि भोग॥
* * * * * * छं० ॥ ३९३ ॥

कबित्त ॥ धनि सुधीर तुअ मात। साहि गजनी गहिय कर॥
गयपानी सुलतान। आनि संभरि ढिल्लियधर॥
उतरि अहं चावंड। राउ जैत सीस मह सब॥
बढे उरह बल राज। कुसुम सर चंद किल्ति तवि॥
जंपिय सु राज प्रथिराज तब। बोल धरी जस पावयौ॥
फिरि चलत मग्ग गज्जन पुरह। राज साहि पहरावियौ॥
छं० ॥ ३९४ ॥

जैतराव और चामंडराय का पृथ्वीराज से कहना कि धीर को शाह के पकड़ने से बड़ा गर्व हो गया है।

साहि डंड डंडयौ। दंड पुंडीर समप्पिय॥
साहि समंदन मंगि। सुष्ष राजनतं अप्पिय॥
गज्जनेस गोधीर। गयौ चावंड जैत लषि॥
हंस अग्र किय राज। वक्र सुष भौंह नंचि चष॥
असपत्ति सेन भंजिय न्रपति। गहन ग्रब्ब धीरह वढै॥
चलि सकट मग्ग नीचें भषन। वहन भार गरुअत बढै॥
छं० ॥ ३९५ ॥

पृथ्वीराज का धीर सहित समस्त पुंडीर वंश को देश निकाले की आज्ञा देना।

करिय रीस प्रथिराज। धीर सुअ नयर निकारिय॥
बाल वृद्ध पुंडीर। छंडि नयरह नर नारिय॥
सहस पंच पुंडीर। जाय लाहौर सपंत्ते॥

सहनिवास तह सजिय । मंडि सबहिन बलि मत्त ॥
पट्टइय दूत धीरह दिसा । लिषिय पच कागद करह ॥
सुनि बत्त चित्त धीरह धनी । गयौ सिंधु साहिब दरह ॥
छं० ॥ ३९६ ॥

देश निकाले की आज्ञा पाकर धीर का राजाओं की रीति नीति को धिक्कारना ।

दूहा ॥ मन चिंतन धीरह करै । इह न्रप पुब्बह रीति ॥
कोटि जतन जौ जोरिय । न्रपति न होवै मीत ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

क्लीव हीक बंधि रज्जनह । महि पान तत चिंत ॥
तिय को काम न उपसमै । न्रिपति न काहू मीत ॥ छं० ॥ ३९८ ॥

अहि पय पान पिबाइये । जतन करे नित नित्त ॥
जब पग चंपै तब डसै । त्यों न्रप अवगुन चिंत ॥ छं० ॥ ३९९ ॥

कवित्त ॥ सइसव तें न्रप मेर । करत वेलानह लग्गै ॥
जो थित सेवा करै । न्रपति कै पहुरै जग्गै ॥
अप्प राज न्रिप ताहि । रीझि धन धान्य समप्पै ॥
सांमि ध्रम्म धन धरै । काज पर सीसहि अप्पै ॥
यों करत बरत दुज्जन बिचें । फारि फोरि दस दिसि करै ॥
संजुत्थौ कुलफ मिलि कुंचिका । त्यों न्रप मन जू जू परै ॥
छं० ॥ ४०० ॥

दूहा ॥ राज वेश्या अगनि जम । अतिथि सु जाचक बाल ॥
पर दुष ए पावे नहीं । वहुरि गांव कुठवाल ॥
छं० ॥ ४०१ ॥

सेठ सुद्रस्सन मुक्कमनि । ए न्रप राजन थंभ ॥
जौ न्रप इनके ना भए । राष नबन के अंभ ॥ छं० ॥ ४०२ ॥

अरिल्ल ॥ समौ विचारि बोलिये बानि । दिष्टी करिय अदिष्टी छानि ॥
अप्प अधीर ग्रह गमनम कीजै । हीर भगें न्रप के न रहीजै ॥
छं० ॥ ४०३ ॥

दूहा ॥ साँप सिंह न्रप सुंदरी । जौ अपनै वसि होइ ॥
तौ पन इनकौं अप्प मन । करो बिसास न कोइ ॥ छं० ॥ ४०४ ॥
कबहूँ वक्र अवक्र कब । कब षंडो कब अस्त ॥
राजा गति दुजराज सम । प्रकृति निवाहन सस्त ॥ छं० ॥४०५॥
न्रप अंदर सोचै नहीं । कह्यौ सुनै सदभाव ॥
दुरजन हित जाने नहीं । अपनै अपनै दाव ॥ छं० ॥ ४०६ ॥
औगुन भ्रत अप्पै मनै । न्रप के भाषें नांहि ॥
सो न्रप भ्रम बेदन कह्यौ । न्रप परमेसरं आहि ॥छं०॥४०७ ॥
बिष्य घुटी माता दियै । बेचि पिता लै दाम ॥
राजा जो सरवसु हरै । नहिं सरनागत ठाम ॥ छं० ॥ ४०८ ॥
माता सरन न मुक्कियै । पिता सरन मन मानि ॥
सेवक औरह चिंतइ । बिना सरन राजानि ॥ ४०९ ॥

यह समाचार पाकर शाह का धीर को जागीर का पट्टा देना और धीर का उसे अस्वीकार करना।

कवित्त ॥ सुनिय बत्त सुलतान । धीर पट्टौ लिषि तथ्यह ॥
सहस अट्ठ ग्रामह सुदेस । धाभ देसह दह पत्तह ॥
सहस पान सुलतानं । धीर निज हथ्थ समप्पत ॥
कही धीर सुनि साहि । राज प्रथिराज सु तप्पत ॥
जो अवर पंच सौसह धरों । ईस कहां उजो अवर ।
उग्गमै दिवाइर पच्छिमह । सौ सेसह छंडें सु धर ॥
छं० ॥ ४१० ॥

शाह का धीर को ढिल्ला की वैठक देना और धीर के कुटुंबियों का लाहौर लूट लेना।

धीर निवेसन साहि । दयौ ढिल्ला पहरत्तब ॥
अरु है ठट्टा ठाम । कियौ आदर अनंत सब ॥
तब सु पत्र लिषि धीर । सोइ कर दूत समप्पिय ॥
तबहिं दूत लाहौर । पत्र पावस कर अप्पिय ॥

बंचिय सु पच पुंडीर तब। लूटि सहर छंड्यौ सुंबर ॥
पट क्रूर कनक केसरि अगर। हय कपूर नग मुत्तिनर ॥
छं० ॥ ४११ ॥

दूहा ॥ हीर चीर करपूर हय। मानिक मुत्ति अमोल ॥
लुटि लाहौर पुंडीरियां। उढ़ि कंचन वैमोर ॥ छं० ॥ ४१२ ॥

सब पुंडीरों का ढिल्ला को जाना और धीर का उनको लाहौर लूटने के लिये धिक्कारना।

कवित्त ॥ हरिय रिद्धि बर नयर। जाय ढिल्ला सापत्ते ॥
तहां निवास निज करिय। सब्ब पुंडीर समथ्थे ॥
आयौ तथ्यह धीर। सुन्यौ लाहौर सु लुथ्यौ ॥
करि पावस समकोय। अप्प हथ्यह हिय कुथ्यौ ॥
उथ्यौ सु कोपि करिवार सजि। बीर भद्र पुंडीर लषि ॥
रन सिंघ सूर धीरन धरहि। कोप समायौ तीयरषि ॥
छं० ॥ ४१३ ॥

दूहा ॥ तहां निवेस पुंडीर किय। हैं गै सथ्थ समथ्थ ॥
तहां निवेसह अट्ठ दिन। मास सत्त सुग तथ्थ ॥ छं० ॥ ४१४ ॥

पृथ्वीराज का धीर को बुलाने का पत्र भेजना।

तब धीरह कग्गर लिष्यौ। प्रथीराज चहुआन ॥
हम धर आगर धीर तूं। आनौ तुम करि मान ॥
छं० ॥ ४१५ ॥

धीर का राजाज्ञा को स्वीकार करना।

बंचि धीर कग्गर न्त्रपति। सिर धरि करि तसलीम ॥
ओछव आदर बहुत किय। उपजि हरष सम सीम ॥
छं० ॥ ४१६ ॥

कवित्त ॥ करन साज मन चिंति। चल्यौ हय लेन पुंडीरह ॥
कछुक सीन सामानि। हुए तब चिंतै धीरह ॥
भावी गति होइ है। कहा बहु बुद्धि बिचारं ॥

हुं पहुँचों न्रप पाय। तौ अप्प मनों चित सारं॥
से ँ अट्ठ अस्व चहुआन घौ। और पुंडीर न बढ्ढिहो॥
पै लग्गि राज अपराध षमि। पाय पराक्रम मिट्टिहो॥
छं० ॥ ४१७॥

चल्यौ धीर कंगुर दिसह। उर धरि जालप जत्तं॥
जैतराव चामंड मिलि। कही राज सों बत्त॥ छं०॥ ४१८॥

धीर का सौदागरों के घोड़ खरीदना।

कवित्त॥ सहस अट्ठ है सथ्थ। सहस पंचह सौदागर॥
आय सपत्ते तथ्थ। धीर दीनौ आदर बर॥
मास एक है परषि। सहस दूनह हय रष्षै॥
और देस में अस्व। लिए अपजानि परष्षै॥
दीए सु द्रव्य मुह मंगि तर। जाति भांति लष्षन सहित॥
रवि रथ्थ जानि उच्चिस्रवा। कै अमोल मोलनि ग्रहति॥
छं० ॥ ४१९॥

घोड़ों की उत्तमत्ता का वर्णन।

इसे अस्व अंमोल। लिये पुंडीर चंद कहि॥
ग्रम्भ जंच अन चढ़ै। जिसे दिए बह्म जग्य महि॥
मिच सेन गंधर्व। लिये अंतेवर प्रब्बल॥
नंदिव नास भूलंत। आथ ऊपर पंडव चलि॥
अनभूत जुद्ध अन चिंति परि। पथ गँध्रब कों बंधि कसि॥
छंडाय जुधिष्ठिर पंचसय। लय पवंग ते पेस कसि॥
छं०॥ ४२०॥

उन्हीं सौदागरों का गजनी घोडे लेकर जाना और उक्त समाचार सुन कर शाह का कुपित होना।

सोदागर गज्जन सपत्त। गोरी सहाब मिलि॥
हय निरषत पतिसाह। सोइ रष्षे जु अप्प कलि॥

मिलि ततार षुरसान। सज्जि ममरेज सु मत्तिय ॥
सुनौ साहि साहाब। सु बर है धीर सपत्तिय ॥
कुप्पयो साहि इह बेन सुनि। सब सौदागुर गहन किय ॥
सुनि बत्त भग्गि सौदागरह। जाय धीर सब सरन लिय ॥
छं० ॥ ४२१ ॥

दूहा ॥ अर्द्ध साथ दै सथ्थ हय। बहुराए पुंडीर ॥
अस्व अमोलक राज कों। लेन चल्यौ अग्रधीर ॥ छं० ॥ ४२२ ॥

कवित्त ॥ अस्व लैन गय धीर। अटक उत्तरि जाहँ नवि ॥
अद्ध साथ पुंडीर। सथ्थ लै सब्ब षान नव ॥
ढुंढि थान षुरसान। तुंग ताजी बहु लिन्नौ ॥
भैरू षान बलोच। भेद षुरसान सु दिन्नौ ॥
लग्गए दूत गोरी सुंबर। बर पुंडीर सु यट्टयौ ॥
बर भेष साजि सौदागिरह। गोरी सेन परठ्ठयौ ॥ छं० ॥ ४२३ ॥

शाह का सौदागरों के घोड़े छीन लेना और उनका भाग कर धीर की शरन लेना।

लै सोदाग्गिर द्रव्य। जाय गज्जनै सपत्ते ॥
मिले साहि साहाब। बत्त कहि कहि बिव रत्ते ॥
मिलें ततार षुरसान। जागि ममरेज सु मत्तिय ॥
कह्यौ साहि सों जाय। धीर दे है सुधिं पत्तिय ॥
कोपियौ साहि साहाब सुनि। सब सौदागिर गहन किय ॥
सुनि बत्त भग्गि सौदागरह। जाय धीर सब सरन लिय ॥
छं० ॥ ४२४ ॥

धीर का शाह को पत्र लिखना।

दूहा ॥ धीर सु लिष्यौ साहि सों। सरन मुझ्झ सब आइ ॥
देहु द्रव्य सु है सहस। न्याय रीति सब राइ ॥ छं० ॥ ४२५ ॥
तुम इन के है मोल ले। अरु ताकें ग्रह बंधि ॥
ऐसी तुम्है न बूझियैं। वेद कुराननि संधि ॥ छं० ॥ ४२६ ॥

शाह का भीरा खोखंद के हाथे घोड़ों की कीमत भेज देना और धीर का सौदागरों को राजी करना।

मीरां षोद मसंद अलि। तिन हथ्थह दिय द्रव्य॥
पठए साह सु धीर सम। कनक बज्ज है सब॥ ४२७॥

अली मसंद समप्पि सह। द्रव्य धीर हथ सोइ॥
धीर समीप बुलाइ दिय। दांम सौदागर दोय॥ छं०॥ ४२८॥

आदर धीर सु भीर किय। सब सौदागर संथ्थ।
कालन मीर सु धीर सम। कहिय साहि सब कथ्थ॥
छं०॥ ४२९॥

गजनी के राज्य मंत्रियों का धीर पर कूर चक्र रचना।

राषि धीर सौदागरह। उभय मास गय जान॥
तब षुरसान ततार मिलि। कियौ मतौ कहि सामि॥ छं०॥४३०॥

सौदागरों को लिख भेजना कि धीर तुम्हें मार कर तुम्हारा द्रव्य छीन लेगा॥

करि सुमंत कग्गर लिषिय। पठयौ कालन मीर॥
अरे मूढ़ तुम द्रव्य कज। हनन सुन्यौ है धीर॥ छं०॥ ४३१॥

जौ हम तुस एकंत मिल। तौ मारहिं पुंडीर॥
दीन कौल पैगंबरी। हम तुम बंधै धीर॥ छं०॥ ४३२॥

सौदागरों का शंकित हो कर परस्पर सलाह करना।

मालन मीर कमाल कर। दियौ सु कग्गर दूत॥
बंचि सुभर भय भीत भय। मंत परट्टिय नूत॥ छं०॥ ४३३॥

सौदागरों में यह मंत्र पक्का होना कि धीर को मार डाला जाय।

कवित्त॥ कालन मीर कमाल। मियां मनसूर सु मन्तिय॥
सेषन खूब निजांम। फते मषत्यार सु पत्तिय॥

सबै मंचि मिलि रचिय। धीर अप्पां सह मारै॥
ता पहिले आपन्न। सबै धीरहि संघारै॥
सुद्धरै काम अप्पां सुबर। साहि सुबर मिलि मारियौ॥
संघार करै सब्बैं सुभर। जो जुध धीर हँकारियौ॥ छं० ॥४३४॥

सौदागरों का अपनी मदत के लिये शाह को अर्जी भेजना।

दूहा॥ मंत प्रपंच जु किज्जियै। लिषि भेजै करि धीर॥
अटक उतर तें सङ्घियै। तो नहि विज्जै मीर॥ छं० ॥ ४३५॥

तब साजिय षुरसान षां। मंत मानि सजि भीर॥
षां गुज्जर भष्षर अली। षां बहाव चलि मीर॥ छं० ॥ ४३६॥

लै कग्गर पतिसाह पै। गुदराई सब बत्त॥
सौदागर बंदे तुमहि। मिलि भेज्यौ कर पत्त॥ छं० ॥ ४३७॥

शाही सेना के सिपाहियों का गुप्त रूप से सौदागरों के काफले में आ मिलना।

कवित्त॥ बर सौदागर एक। षान पीरोज सँपत्त॥
मिलि आये पुंडीर। हय सु लै करि उनमत्त॥
दाग भंजि सुरत्तान। अटक उत्तरि पुंडीरं॥
हम वंदे सविहान। साहि हम सज्जय बीरं॥
सुरतान सुबर. चौकी बिहर। घात बंधि अप उत्तरै॥
तो सरन आय दै सथ्थ हम। सुबर सुभट हम उत्तरै॥
छं० ॥ ४३८॥

दूहा॥ दियौ हुकम गुज्जर भषर। बर बंधे करि तोन॥
जाय मिले सोदागिरह। ग्रही आस मिसि मोन॥ छं० ॥४३९॥

एक बुद्धि करियै जु इह। मत लै बैठहि धीर॥
चूक करहि सङ्घै चलंत। तेक सजे करि मीर॥ छं० ॥ ४४०॥

सौदागरों का धीर को डेरे पर बुला कर एकान्त में सलाह करना और कालन कमाल का पीछे से पुंडीर का सिर धड़ से अलग कर देना।

कवित्त ॥ तब सज्जिय पट्टान। साहि बड़वत्त उड़ाथिय ॥
कालन मीर कमाल। बोल धीरह लै आइय ॥
लै बैठे एकंत। साहि वत्तो भय बुझ्झै ॥
हम आये तो सरन। अबैं गुह्यां कह गुह्यैं ॥
उच्चर्यौ धीर गरुअत्तनह। कोय साहि मो सरन हय ॥
नह डरो आज रष्यों तुमहि। जो जम आवै तुम्म जय ॥
छं० ॥ ४४१ ॥

अड रयन पल्लानि। अटक सब सथ्थ सँपत्तौ ॥
मेळवान करि पंति। धीर रुंध्यौ बल मतौ ॥
चूक चूक संभरी। सब्ब पुंडीर समाही ॥
सबैं सेन आहुट्टि। धीर हुं धीरज साही ॥
कलहंत केलि लग्गी विषम। घाइ पुंडीर अहुट्ठि घट ॥
धनि धनि नरिंद बर सद हुअ। जिहि पति रष भंजी विघट ॥
छं० ॥ ४४२ ॥

तब कालन करि क्रूर। कह्यौ तुम सरन बयट्टौ ॥
असि लै कालन उट्ठि। आय पिन पुट्ठि निहट्टौ ॥
कढ्ढि तेग असि झारि। सीस उच्यौ धर तुच्यौ ॥
उवै तेक असमांन। सीस गय स्वर न पुच्यौ ॥
निझ्झारि तेक धर ढारि धर। हय कमाल कालंन न दुर ॥
सयदून सहि पट्टान रन। इह अचिज्ज अप्पै अमर ॥छं०॥४४३॥

सौदागरों का धीर की लाश गजनी को भेज देना।

पत्ति पहर पुंडीर। जीय पति कै सथ मुक्यौ ॥
धीर धारि ढंढोरि। धार धारनि तन चुक्यौ ॥
जो जानत चहुआन। सोपि कीनौ पुंडीरं ॥
तिन दंतिन बर षंडि। जुड्ड धर धर करि मीरं ॥

संग्रही लुथ्थि सुरतान पर । सब आहुट्टिय राज भर ॥
गोरी नरिंद बाजे बजग । सुबर बीर ढिल्लिय सुधर ॥
छं० ॥ ४४४ ॥

धीर के बध की खबर पाकर पावस पुंडीर का धावा करना, पठानों और पुंडीरों का युद्ध, पठानों का भागना, पुंडीरों का जयी होना ।

सहस च्यारि पट्ठान । मेलि पुंडीर धारि धर ॥
तत पावस पुंडीर । सुनी बत्तह चवि हरहर ॥
सजि पावस पुंडीर । चढ्यौ कंधहं सुक रष्षं ॥
बीर भद्र नरसिंघ । तेज पुंडीर तरष्षं ॥
लषमसी सेन लष्यांह भरी । रंघर राघ समथ्थरिन ॥
संक्रमे सेल बंधे सुभर । पष्पर सिंघ सुसाजतन ॥ छं० ४४५ ॥

दूहा ॥ अति आतुर पावस गयौ । धाय सँपत्तौ तथ्थ ॥
मनों पवन पावस घुरै । भरि लायौ षग हथ्थ ॥ छं० ४४६ ॥

कवित्त ॥ आय सँपत्ते सोय । साज ठटे पट्ठानह ॥
हक्कि धक्कि हय नंषि । असँष असिबर उट्टानह ॥
तेग तार क्रकस करार । कहै मुष मार मार सुर ॥
भगि पठान उसमानि । विमुष जिम भारि हारि भर ॥
सें अट्ठ पठ्ठ धर ढर धरिग । जित्ते बर पुंडीर रन ॥
जै जया सद्द आयास हुअ । धंनि धीर धीरष्प तन ॥ छं० ४४७॥

दूहा ॥ आए पच्छ पुंडीर सब । मिले भीर लष धीर ॥
बिनै सीस सब दून बहि । बधि धर रष्षन धीर ॥ छं० ॥ ४४८ ॥

जिहि असिवर झरगय ढरिग । जिन रन सध्यौ साहि ॥
सो सध्यौ सोदागिरह । करों ग्रव्व जिन काय ॥ छं० ॥ ४४९ ॥

धीर की मृत्यु पर पृथ्वीराज का शोक करना ।

चूक तेक तुट्यौ सुसिर । उठि कबंध बेबंग ॥
मिलि चबसह सें मारियो । गय प्रथिराजह रंग ॥छं०॥४५०॥

बँचौ पचं प्रथिराज नृप। मन मंन्यो बहु सोक
हम धर अग्गर धीर हौ। सो पत्तौ सुरलोक ॥ छं० ॥ ४५१ ॥

धीर की मृत्यु का तिथि वार।

अरिल्ल ॥ भादौं सेत चतुर्द्दसि भारी। बर बर धीर गयौ सुषकारी ॥
मानै महल ब्रषा रिति राजन। करै न महल भृत्त भर काजन ॥
छं० ॥ ४५२ ॥

तदन्तर राजा का राज्य काज छोड़ कर संयोगिता के साथ रस विलास में रत होना।

दूहा ॥ बरषा रिति राजन बिलसि। मिले जानि रति मैंन ॥
देस भूमि भर छंडि दिय। खबरि न है दिन रैंन ॥ छं० ॥४५३ ॥

इति श्री कविचन्दविरचिते प्रथीराजरासके धीर-
पुंडीर पातिसाहग्रहनमोषन धीर बंधनो
नाम चौसठमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ६४ ॥

विवाह सम्यो लिष्यते ।

[पैंसठवां समय ।]

———:०:———

पृथ्वीराज़ की रानियों के नाम ।

कवित्त ॥ प्रथम परनि परिहारि । राइ नाहर की जाइय ॥
जा पाछै इंछनीय । सलष की सुता बताइय ॥
जा पाछै दाहिमी । राय डाहर की कन्या ॥
राय कुँअरि अति रीत । सुता हंमीर सुमन्या ॥
राम साह की नंदिनी । बडगुज्जरि बानी बरनि ॥
ता पाछै पदमावती । जादवनी जोरी परनि ॥ छं० ॥ १ ॥

राय धन्न की कुंअरि । दुति जमुगौरी सुकहियै ॥
कछवाही पज्जूनि । भ्रात बलिभद्र सुलहियै ॥
जा पाछै पुंडीरि । चंद नंदनी सुगायव ॥
ससि बरना सुंदरी । अबर हंसावति पांयव ॥
देवासी सोलंकनी । सारँग की पुत्री प्रगट ॥
पंगानी संजोगता । इतें राज मंहिला सुपट ॥ छं० ॥ २ ॥

भिन्न भिन्न रानियों से विवाह करने के वर्ष ।

पद्धरी ॥ ग्यारहै बरस प्रथिराज तांम । परनियै जाय परिहार ठांम ॥
पुहकर सुथान जोरी सुकिन्न । नाहर सुषेत परिसुता लिन्न ॥
छं० ॥ ३ ॥

बारमै बरस रा सलख सोय । दिन्नी सुआय इंछनी लोय ॥
आबू सुतोरि चालुक्क गंज्जि । किन्नौ सुव्याह परिभाव भंजि ॥
छं० ॥ ४ ॥

तेरहें बरस दाहिमी व्यहि । दिन्नी सुबहिन चामंड चाय ॥
चवदमै बरस प्रिथिराज लोय । व्याही ससुता हम्मीर सोय ॥
छं० ॥ ५ ॥
हाहुलि हमीर सुतिलक दिन्न । कन्या सुव्याहि उड्डार किन्न ॥
पन्नमैं वरस चहुआन वीर । बडगुज्जरि परने अति गहीर ॥
छं० ॥ ६ ॥
राम साहि की सुता जानि । व्याहे सुन्नपति अति हेत मानि ॥
सोलहैं बरस सूवा सँपेस । व्याहे सुजाय पूरब्ब देस ॥
छं० ॥ ७ ॥
गढ समद सिषर जादव पजाय । लिन्नी सुतारूनि बिहंसेन पाय
सचमैं वरस हुआन साजि । राय धन की सुता गिरदेव गाजि ॥
छं० ॥ ८ ॥
अठारमैं बरस चहुआन चाहि । कछवाह वीर पज्जून व्याहि ।
इक मात उदर धनिगरभ सोय । बलिभद्र कुंअर जायैं सदोय ॥
छं० ॥ ९ ॥
बरसें गुनीस पुंडीरि व्याहि । चन्द की सुता मुष चन्द चाहि ॥
बीसमें बरस चहुआन धारि । ससिबरता ल्याये बल बकारि ॥
छं० ॥ १० ॥
इकइमें बरस संभरि नरेस । हंसावति ल्याये गंजि देस ॥
बाईसैं बरस प्रिथीराज पूर । सारंग सुता व्याहे सुसूर ॥
छं० ॥ ११ ॥
छत्तीस बरस पट मास लोय । पंगानि सुता ल्याये सुसोय ॥
रट्ठौरि ल्याय चौसठि मराय । पंचास लाष अरिदल षपाय ॥
छं० ॥ १२ ॥

इति श्रीकविचन्दविरचिते पृथ्वीराजरासके प्रथिराज विवाह नाम पैंसाठमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ६५ ॥

बड़ी लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते ।

[छाछठवां समय]

रावल समर सिंह जी का स्वप्न में एक सुन्दरी को देख कर उससे पूछना कि तू कौन है और उसका उत्तर देना कि मैं दिल्लीराज्य की राजश्री हूं ।

दूहा ॥ विलसत सुष दिन प्रति नवल । चिचकोट चतुरंग ॥
सुपनंतर लषि सुन्दरी । सेत वस्च मन भंग ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ प्रथा कंत करिं प्रेम । जाम इक रही रजन्निय ॥
निद्रा रावर समर । पेषि चहुआन अवन्निय ॥
उज्जल वस्त्र पविच । षिनक रोवै षिन गावै ॥
षिनक लियै भेर भीर । षिनक अप्पह संतावै ॥
नरलोइ देव देवंगना । तू रंभा कहि कित रहै ॥
पहु अच्छ बधू बीरहतनी । को तन गोरी संग्रहै ॥
छं० ॥ २ ॥

रावलजी का पृथा से कहना कि अब पृथ्वीराज पकड़ा जायगा और दिल्ली पर मुसलमानों का राज्य स्थापित होगा ।

तब जग्गयौ पृथनाथ । सुपन लड्डौ सु विचारिय ॥
कह्यौ प्रिया एकंत । सुपन पायौ अकरारिय ॥
दिल्लौ पत्ति गज्जनेस । करे कंदल धर सट्टै ॥
पकरै जब प्रथिराज । तबह गोरी तन तुट्टै ॥